



अखिल भारतीय तेरापंथ वाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

अर्हत उवाच

वुसिते विगयभिद्धी य,
आयाणं सारक्वए।

संयमी व्यक्ति धर्म में स्थित
रहे। वह किसी भी
इंद्रिय-विषय में आसक्त
न बने और आत्मा का
संरक्षण करे।

• नई दिल्ली • वर्ष 23 • अंक 3 • 25 - 31 अक्टूबर, 2021



प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 23-10-2021 • पेज : 12 • ₹ 10

ममत्व भाव को ढीला छोड़ देने का प्रयास करें : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, 16 अक्टूबर, 2021

धर्मज्ञाता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशणा प्रदान करते हुए फरमाया कि अर्हत वाइम्य के आगम साहित्य का अंग विभाग है, उसमें दूसरा आगम सूयगडो है। यह एक ऐसा आगम है, जिसके अध्ययन में भगवान महावीर की स्तुति है।

श्रुत स्कंद का पहला अध्ययन पहला उद्देश्य और प्रारंभ के पहले श्लोक में शास्त्रकार ने बताया है कि सुधर्मा स्वामी ने कहा—बुद्ध बनो, बोधि को प्राप्त करो और तोड़ डालो, बंधन को जानकर के तोड़ डालो। एक आदेश, निर्देश और उपदेश मानो दे दिया गया।

तीन चीजें हमारे सामने इस श्लोक के माध्यम से आ जाती हैं। पहली बात है—बोधि को प्राप्त करो। दूसरी बात आती है—तोड़ डालो। तीसरी बात आती है—बंधन को तोड़ डालो। हम इन तीनों की परिक्रमा-यात्रा करें या मनन करें। पहले बंधन की बात नहीं कही। तोड़ने की बात भी नहीं की। इस श्लोक के प्रथम में कहा गया है—समझो, जानो, बोधि को प्राप्त करो। ज्ञान का निर्देश दे दिया है। ज्ञान प्राप्त करो।

ज्ञान का बहुत महत्व है। जैन शासन में पंचाचार की बात आती है और बात आती है—आचार प्रथम धर्म है। ज्ञान भी एक प्रकार का ज्ञानाचार होता है। दूसरे संदर्भ में आचार का मतलब चारित्र्य भी हो जाता है। ज्ञान और आचार को अलग-अलग ले लें तो ज्ञान पहला धर्म



है। दसवें आलियं में भी यह बात आती है पहले ज्ञान फिर आचरण-दया।

ज्ञान के बिना आचार का निर्धारण भी कैसे होगा। आचार को जानेंगे ही नहीं, तो कितना पालन कर पाएंगे। ज्ञानी मनुष्य आचार और अनाचार का विवेक कर सकता है। ज्ञान जितना-जितना स्पष्ट-निर्मल हो जाएगा, समझ लेंगे बात को तो, फिर वो आचरण में आसानी से आ सकेगा। नवतत्त्व को जानेंगे तो बंधन को भी जानना है। बंधन को जानकर बंधन को तोड़ो। ताकि बंधन से मुक्ति मिल सके।

जम्बू स्वामी ने सुधर्मा स्वामी से पूछा कि भगवान महावीर ने बंधन किसको

कहा है?

सुधर्मा स्वामी का निर्देश मिल गया कि बोधि को प्राप्त करो और तोड़ डालो। तब जम्बू स्वामी ने जिज्ञासा की कि किसको तोड़ें? बंधन किसको कहा है, भगवान ने? सुधर्मा स्वामी ने अपने ढंग से उत्तर दिया कि भगवान महावीर ने परिग्रह और हिंसा को बंधन कहा है। बंधन का हेतु है—ममत्व भाव। इसको तोड़ने का उपाय है कि धन और परिवार में अत्राण का दर्शन करो। कोई मेरा त्राण नहीं है। दूसरी बात है—जीवन मृत्यु की ओर जा रहा है। ये अनुप्रेक्षा करो तो तोड़ने की प्रक्रिया में आगे बढ़ सकते हो।

आदमी पुरुषार्थ करता है, उसका

कोई प्रयोजन भी तो होना चाहिए। प्रयोजन के बिना सामान्य आदमी भी प्रवृत्ति नहीं करता। सामान्य आदमी व्यवहार के धरातल पर दुःख की निवृत्ति के लिए और सुख की उपलब्धि के लिए प्रवृत्ति करता है। अध्यात्म के जगत में देखें तो बंधन से मुक्ति यानी मोक्ष की उपलब्धि के लिए साधक पुरुषार्थ करता है। बंधन अपने आपमें दुःख है, मोक्ष अपने आपमें सुख है।

बंध से मोक्ष पाना है, तो बंध को तोड़ना होगा। बंधन से मुक्ति का प्रयास हो, यह एक कहानी से समझाया कि कायोत्सर्ग से बंध को तोड़ा जा सकता है, मुक्ति को प्राप्त किया जा सकता है। शरीर

एक पिंजरा है, आत्मा एक तोता है। आत्मा शरीर से हमेशा के लिए मुक्त हो जाए वह बंधन से मुक्ति है। कायोत्सर्ग से शरीर को ही नहीं, ममत्व भाव को ढीला छोड़ देने का प्रयास करें। प्रथम श्लोक में जानो और बंधन को तोड़ो, ये संदेश सुधर्मा स्वामी की ओर से जम्बू को दिया गया है।

पूज्यप्रवर की सन्निधि में मुनि मार्दवकुमार जी ने नौ की तपस्या के प्रत्याख्यान लिए। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया कि दस धर्मों में मार्दव एक धर्म है। तुम भी मार्दव संपन्न बनो। जीवन में लक्ष्य रखो कि मार्दव धर्म की साधना करो। अहंकार नहीं करना। मृदु बनो। मुमुक्षु दीप्ति को पूज्यप्रवर ने प्रेरणा संस्कृत भाषा में ही करवाई।

मुख्य नियोजिका जी ने प्रति संल्लीनता के पाँच प्रकारों की विवेचना करते हुए कहा कि बाह्य इंद्रियों से व्यक्ति गहराई से अंदर नहीं उतर सकता है। उसका उपाय है—प्रति संल्लीनता। इंद्रियों के विषयों के प्रति हमारा राग-द्वेष न हो। राग-द्वेष प्रियता-अप्रियता पैदा कर सकते हैं। जैसे ही जीव राग-द्वेष से मुक्त होता है, मुक्ति को प्राप्त कर लेता है। इंद्रियों के संयम के लिए राग से विराग की ओर प्रस्थान करना होगा।

मुमुक्षु दीप्ति ने संस्कृत भाषा में अपनी अभिव्यक्ति श्रीचरणों में अर्पित की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

जीवन कैसे जीना ये चिंतन हमारे में स्पष्ट रहे : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, 15 अक्टूबर, 2021

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशणा प्रदान करते हुए फरमाया कि इस लोक में छः द्रव्य हैं। जिनमें पुद्गलस्तिकाय ही एक ऐसा तत्त्व है, जिसको आँखों से देखा जा सकता है। हालाँकि सारे पुद्गल हमारी आँखों के दृश्य नहीं बनते हैं। परमाणु भी पुद्गल हैं। पर हमारे नेत्रों के लिए वे ग्राह्य नहीं बनते। इतने सूक्ष्म हैं, पर जो देखे जाते हैं, वे सब पुद्गल ही हैं।

शास्त्रकार ने ठाणं के दसवें स्थान में बताया है कि पुद्गल अनंत हैं। पुद्गल-पुद्गल में भी गुणात्मक अंतर होता है। कोई नीला, पीला, श्वेत आदि होते हैं। फिर इनमें कितने गुणों वाली कलात्मकता या ललात्मकता होती है।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी ने पहले लिखा था कि मैं आत्मा को जानता हूँ पर मानता नहीं हूँ। जानना और मानना में अंतर है। साक्षात् जो सामने या स्पष्ट होती है, उसको तो जाना जा सकता है। बाकी तो जो ग्रंथों में लिखा है, वो मान लेते हैं।

ठाणं आगम में दस स्थान हैं। ये आज दसवें स्थान का अंतिम सूत्र आ गया है। ठाणं आगम का मेरा व्याख्यान अंतिम तक आ गया है। संपूर्णता को मानो प्राप्त हो रहा है।

(शेष पृष्ठ 2 पर)



तेजस्विता का उपयोग विनाश में नहीं बल्कि विकास में करें : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १३ अक्टूबर, २०२१

ज्ञान रूपी प्रकाश के प्रदाता आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देषणा प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में शक्ति का महत्त्व है, जिसके पास तेज है, शक्ति है, वह व्यक्ति भी एक विशिष्ट व्यक्ति बन जाता है। तेजस्विता है, फिर आकार आदमी का छोटा है या बड़ा उसका महत्त्व नहीं। तेजस्विता का महत्त्व होता है।

संस्कृत श्लोक में कवि ने तीन उदाहरणों से अपनी बात बताई है कि पहला उदाहरण है—हाथी का। विशालकाय हाथी को छोटा सा अंकुश कंट्रोल में कर लेता है। एक छोटा सा दीपक अंधकार को नष्ट कर देता है। एक बड़े पहाड़ को एक छोटा सा वज्र भी चूर-चूर कर देता है। एक ओर विशालता के उदाहरण हैं, दूसरी ओर उनके सामने छोटे-छोटे पदार्थों के उदाहरण हैं। छोटा सा पदार्थ भी बड़े पदार्थों पर हावी होता है। कवि ने निष्कर्ष रूप में कहा है कि जिसमें तेज है, वह बलवान है। बड़ा होने से कोई बलवान हो जाएगा, जरूरी नहीं।

ठाण में तेज का महत्त्व बताया गया है। प्रस्तुत सूत्र में साधु के संदर्भ में और देवता के संदर्भ में तेज की बात बताई गई है। साधु अहिंसा का उपदेश देता है, हिंसा मत करो, विनाश मत करो इसलिए वह माहण होता है। श्रमण यानी तपस्वी। इसलिए साधु श्रमण माहण होता है।

एक साधु को तेजोबल प्राप्त हो जाती है। तेजोबल विनाशकारी शक्ति है। वह साधु के पास है। कोई व्यक्ति साधु के पास आकर उसकी अवहेलना ज्यादा कर देता है। हालांकि कोई ज्यादा अवहेलना कर दे, पर साधु को कुपित नहीं होना चाहिए। ऋषि तो महान प्रसाद-प्रसन्नता वाले होते



हैं, होने चाहिए। पर छद्मस्थ है, गुस्सा भी आ जाता है। कभी अहम् की भाषा भी साधु बोल सकता है, कभी छल-प्रवचन भी कर सकता है।

लब्धि का होना एक बात है, उपयोग क्या करना वह अलग बात है। कोई व्यक्ति साधु की अत्यासातना करने लगा। साधु कुपित हो गया, वो तेजोबल का उपयोग उस व्यक्ति पर करता है, उस पर तेज का प्रक्षेप करता है। तेज निकलकर अवहेलना करने वाले व्यक्ति पर जाता है, उसको प्रभावित कर प्रताड़ित करता है और उस आदमी को साधु तेज से अंत कर डालता है। हो सकता है, ऐसा काम साधु कर लेता है।

पंचेन्द्रिय प्राणी की हत्या कोई साधु कर दे तो हम तो व्यवहार में उसका साधुपन खत्म मान लेते हैं। नई दीक्षा ले तो बात

ठीक है। तेजोबल से खत्म कर देना एक बात है, ऐसी दस बातें हैं। दूसरी बात है—मान लो साधु की अवहेलना किसी ने कर दी, परंतु कोई देवता साधु के मित्र या किसी रूप में है, वो प्रभावित हो कुपित हो जाता है कि मेरे महाराज की अवहेलना करता है, तो वो देवता तेज फेंकता है। वह तेज उस अवहेलना करने वाले को प्रताड़ित कर उसे भस्म कर देता है।

तीसरी बात है, कोई आदमी अत्यासातना करता है, तो साधु और देवता दोनों कुपित होकर उसको मारने का संकल्प करके तेज फेंकते हैं और उसको भस्म कर देते हैं। चौथी बात है कि व्यक्ति साधु की अत्यासातना करता है तो साधु उस पर तेज फेंकता है, तो उस आदमी के शरीर में फोड़े हो जाते हैं। फोड़े फूटते हैं, फिर उसे

तेज से भस्म कर दिया जाता है। आदमी खत्म हो जाता है।

पाँचवाँ प्रकार है—इसी प्रकार साधु नहीं देवता कुपित होकर तेज फेंकता है। उससे फोड़े होते हैं, फिर वो फूटते हैं और फिर वो आदमी खत्म हो जाता है। छठा प्रकार है कि देव और साधु दोनों कुपित हो तेज फेंकते हैं, उस आदमी के फोड़े होते हैं, फिर वे फूट जाते हैं। तेज से उसे भस्म कर दिया जाता है।

सातवीं बात है कि वो आदमी साधु को अवहेलित करता है, साधु तेज उस पर फेंकता है। उस आदमी के शरीर में फोड़े उत्पन्न होते हैं, फोड़े फूटते हैं, फिर फुसियाँ निकलती हैं। वे फूटती हैं। फिर वे फूटकर उसे तेज से भस्म कर देती हैं। आठवीं बात है देव कुपित हो जाता है और नौवीं बात में

साधु और देव दोनों कुपित हो तेज फेंकते हैं। उस आदमी के फोड़े होते हैं। फोड़े फूटते हैं, तो फुसियाँ हो जाती हैं। फुसियाँ फूटकर वो आदमी को तेज से भस्म कर देती हैं।

दसवाँ प्रकार थोड़ा सा विशेष प्रकार है। इसमें उल्टी बात हो जाती है। किसी आदमी ने साधु अवहेलना-अत्यासातना कर दी। वो साधु कुपित हो जाता है। वो साधु उस पर तेज फेंकता है। परंतु सामने वाले आदमी के पास भी लब्धि है। वो वापस साधु पर तेज फेंकता है। परंतु वह तेज साधु में घुस नहीं पा रहा है। वो तेज साधु के ऊपर-नीचे, आगे-पीछे प्रतिक्षणा करता है। वह तेज आकाश में चला जाता है। वहाँ से लौटकर साधु की तेजस्विता से प्रतिहत होता है। फिर वह लौटता है, लौटकर वह साधु पर तो प्रभाव डाल नहीं पाया। तेज थक गया। थककर वो तेज जिसने फेंका था उसी के पास जाएगा। उसी के शरीर में प्रवेश करके उस आदमी को भस्म कर देता है। आदमी की तेजोबल भी खत्म और आदमी भी खत्म हो जाएगा।

जो तेजोबल से दूसरे का विनाश करना चाहता है, तो कभी-कभी उसका विनाश उसी तेज से हो सकता है। इस तरह ठाण में बताया गया है, किस तरह साधु भी दूसरे का विनाश करने का प्रयास कर लेता है। इस सारे प्रकरण से हमें दो बातों की प्रेरणा प्राप्त हो सकती है कि जिसके पास तेज है, वो विशिष्टता है। दूसरी बात है कि तेजस्विता से किसी को भस्म करने का, खत्म करने का, किसी का विध्वंस करने का, किसी का विनाश करने का प्रयास साधु को तो करना ही नहीं चाहिए। दूसरों को भी दुर्भावना से किसी के विनाश का प्रयास नहीं करना चाहिए। (शेष पृष्ठ ३ पर)

जीवन कैसे जीना ये चिंतन... (प्रथम पृष्ठ का शेष)

हमारे ३२ आगमों में ११ अंग स्वतः प्रमाण है, बहुत महत्त्वपूर्ण है। उनमें से ये तीसरा अंग ठाण है। इसमें कहीं-कहीं टिप्पण भी विस्तृत रूप में आया है। गुरुदेव तुलसी के सान्निध्य में वि०सं० २०१२ में आगम संपादन शुरू हुआ था। स्थानांग टीका भी है, टीका से व्याख्यान में सुलभता हो जाती है। टीकाकार अभयदेव सूरी के प्रति भी अहो भाव रखता हूँ। चूर्ण भी मिलती है, डब्बा और भाष्य भी मिलती है। जयाचार्य द्वारा जोड़े लिखी गई हैं। जो राजस्थानी भाषा में है।

व्याख्यान का भूषण है, आगम। आगम का अपना वैशिष्ट्य है।

हमारे प्रथम अनुशास्ता आचार्य भिक्षु ने कितना आगमों का पठन-स्वाध्याय किया होगा और चारित्र्यात्माओं ने भी किया होगा। यह कार्य अविच्छन्नरूपेण चलती रहे। अब मैं ससम्मान इस ठाण को स्थापित कर रहा हूँ। ठाण आगम व्याख्यान-माला संपन्नता की घोषणा भी करता हूँ।

जोधपुर निवासी सुनील भंडारी ने अपनी पुस्तक जीवन के रंग जीवन के संग पूज्यप्रवर के सान्निध्य में लोकार्पित किया। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया कि अनेक आलेख इसमें समाविष्ट है। जीवन एक ऐसा कालमान है, उसको कैसे जीना यह बड़ी महत्त्वपूर्ण बात होती है। जीवन तो और भी जीव जी लेते हैं। जीवन कैसे जीना ये चिंतन हमारे में स्पष्ट रहे। जीवन को कैसे आध्यात्मिकता से समर्पित किया जा सके, ये साथ में विचारधारा भीतर से स्वीकृत हो जाए तो ये जीवन तो मानो छोटा-सा है, आगे के कालमान का हित हो सके, इस उद्देश्य के साथ और वर्तमान भी अच्छा रहे, इस उद्देश्य के साथ जीवन जीया जाए तो बहुत नि-श्रेयस्कर यह जीवन बन सकता है।

भंडारी जी लोगों को अच्छे विचार, अच्छी सामग्री जो आध्यात्मिक-धार्मिक हो, देते रहें। भंडारी जी खूब आध्यात्मिक विकास करते रहें। ये छोटी-सी पुस्तक पाठक को चिंतन प्रदान करने वाली हो, मंगलकामना।

भीलवाड़ा जिला एडवोकेट संघ का कार्यक्रम

पूज्यप्रवर की सन्निधि में शुरू हुआ। पूज्यप्रवर ने आशीर्वचन फरमाया कि हमारी दुनिया में न्याय और अन्याय की बात होती है। अन्याय करना भी गलत है, अन्याय को बार्दशत करना भी गलत होता है। अन्याय के विरुद्ध लड़ाई करना भी एक शौर्य की बात होती है। एडवोकेट एक ऐसा वर्ग है, जो अन्याय के खिलाफ जंग लड़ने वाला होता है।

वकील के पास अपनी बौद्धिकता और तार्किक शक्ति अपेक्षित होती है। बौद्धिकता का अच्छा उपयोग है। जीवन-विज्ञान आदमी की चेतना को अच्छा बनाता है। अहिंसा यात्रा के भी तीन उद्देश्य हैं—सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति है, जिनका हम प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। अनेकता में एकता रहे। जैन धर्म, तेरापंथ धर्मसंघ व साधुचर्या के बारे में विस्तार से बताया। पूज्यप्रवर ने अच्छा जीवन जीने की प्रेरणा दी। जिज्ञासाओं का समाधान किया।

मुख्य नियोजिका जी ने काय-क्लेश व प्रतिसंस्लीनता तप को विस्तार से समझाते हुए कहा कि शरीर को कपड़ों से न ढकना, सर्दी को सहन

करना ही काय-क्लेश होती है, खुजली न करना, उसे सहन करना, मुँह में थूक आए तो न थूकना व शरीर को विभूषा से दूर रखना भी काय-क्लेश की साधना है। इंद्रियों और मन का अपने विषयों में निवर्तन करना, अपने स्थान पर स्थिर रखना, प्रति संस्लीनता है।

साधुविर्या जी ने नंदी संपन्नोऽम स्याम का विवेचन करते हुए कहा कि दो शब्द हैं—समृद्ध और दरिद्रता। सभी समृद्ध बनना चाहते हैं। समृद्धि दो प्रकार की होती है—द्रव्य पदार्थत्मक और आध्यात्मिकता। दोनों का वैभव आनंद देने वाला होता है, पर द्रव्य पदार्थत्मक समृद्धि अस्थायी है। आध्यात्मिक समृद्धि स्थायी होती है।

मुनि कुमार श्रमण जी ने अपनी अभिव्यक्त दी। व्यवस्था समिति के अध्यक्ष प्रकाश सुतरिया ने वकीलों का स्वागत किया। सुनील भंडारी ने अपने अनुभव बताए। डॉ० विजयलक्ष्मी नाणावटी ने अपनी पुस्तक सतरंगा सीजन श्रीचरणों में अर्पित की।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अचिंत्य आत्म सिद्धियों का द्वार है तपस्या

विल्लुपुरम।

साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी के सान्निध्य में तपस्याओं की निरंतर झड़ी लगी हुई है। विल्लुपुरम तेरापंथ के इतिहास में आयोजित इस प्रथम चातुर्मास में कृश (८ वर्ष), साधना (६ वर्ष) और श्रद्धा (१२ वर्ष) के एकासन मासखमण का तपोभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया। नमस्कार महामंत्र से प्रारंभ कार्यक्रम में साध्वी प्रबोधयशा जी ने मंगलाचरण गीत प्रस्तुत किया।

साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी ने कहा कि अचिंत्य आत्म सिद्धियों का द्वार है—तपस्या। आत्मबल, श्रद्धाबल एवं निष्ठाबल के द्वारा ही आत्म उज्ज्वलता प्राप्त होती है। तपोमान

व्यक्ति निरंतर आगे बढ़ता है और आत्मनिग्रह भाव से परमानंद को प्राप्त करता है। छोटे बच्चों ने एकासन के मासखमण कर अपने दृढ़-मनोबल एवं संकल्पबल का परिचय दिया है। मूर्तिपूजक संप्रदाय के पुजारी निर्मल जी ने २१ उपवास एवं संतोष सुराणा ने १६ उपवास के साध्वीश्री से प्रत्याख्यान किए।

साध्वी अनुप्रेक्षाश्री ने कहा कि सफलता की प्राप्ति में केवल बौद्धिक विकास ही पर्याप्त नहीं होता, अपितु भावनात्मक विकास का होना भी होना अत्यंत अपेक्षित है। साध्वी सन्मतिप्रभा जी ने कहा कि छोटे बच्चों ने अभिनव प्रेरणा की मशाल जलाई

है और आगे बढ़े हैं एवं अपनी आत्मशक्ति का परिचय दिया है।

स्थानकवासी संप्रदाय से दीक्षार्थिनी बहन वंदना ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। तेरापंथ सभा से जवेरीलाल सुराणा, तेयुप से नितेश सुराणा, महिला मंडल व ज्ञानशाला से अंजली सुराणा, कन्या मंडल से दिशा बाफना ने अपने विचारों द्वारा तपस्वियों का अभिनंदन किया। महिला मंडल की गीतिका एवं तपस्वियों के परिवार से रक्षा, वंदना, रेखा आंचलिया, दर्शना छल्लाणी, वलवनुर ज्ञानार्थियों ने एक छोटी सी नाटिका प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन ललिता सुराणा ने एवं आभार ज्ञापन राजेश सुराणा ने किया।

वृक्षारोपण कार्यक्रम

दिल्ली।

गांधी जयंती व लालबहादुर शास्त्री जयंती के अवसर पर वृक्षारोपण व स्वच्छता का कार्यक्रम संपन्न हुआ। कार्यक्रम सेंट्रल पार्क कृष्णा नगर में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि व कृष्णा नगर क्षेत्र से पार्षद संदीप कपूर ने पर्यावरण व स्वच्छता के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी साझा की।

कार्यक्रम से पहले शासनश्री साध्वी रविप्रभा जी ने मंगलपाठ का श्रवण किया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से की गई। स्वागत वक्तव्य तेयुप, दिल्ली के सहमंत्री अशोक सिंधी व मंच का संचालन किशोर मंडल सहप्रभारी श्रेयांस चोरड़िया तथा आभार ज्ञापन किशोर मंडल प्रभारी विनोद चोरड़िया ने किया।

कार्यक्रम में गांधीनगर सभा अध्यक्ष अनिल पटवा, मंत्री महेंद्र श्यामसुखा, महिला मंडल संयोजिका सीमा चोपड़ा, अणुव्रत समिति, दिल्ली के मंत्री धनपत नाहटा, तेयुप, दिल्ली के सहमंत्री अशोक सिंधी, कोषाध्यक्ष पवन श्यामसुखा, संगठन मंत्री मयंक दुगड़, क्षेत्रीय संयोजक गौरव मणोत व श्रावक-श्राविका समाज की अच्छी उपस्थिति रही।

मंगलभावना समारोह

सिकंदराबाद।

डी०वी० कॉलोनी में शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में समणी डॉ० स्थितप्रज्ञा जी का मंगलभावना समारोह मनाया गया। शासनश्री साध्वी जिनरेखा जी ने कहा कि सेवा परमो धर्म: मानवता उसी मनुष्य में होती है जिसमें सेवा भावना होती है। तेरापंथ धर्मसंघ में विलक्षण सेवा होती है। डॉ० समणी स्थितप्रज्ञा एक प्रबुद्ध समणी हैं, जिनकी आचार्य तुलसी के करकमलों से प्रथम समणी दीक्षा हुई। समणी विपुलप्रज्ञा जी की वक्तव्य शैली, गायन शैली बहुत ही प्रभावशाली रही। उन्होंने गीत के माध्यम से प्रस्तुति दी। समणी आदर्शप्रज्ञा जी ने अपने विचार व्यक्त किए।

कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल की बहनों ने किया। साध्वी धवलप्रभा जी, साध्वी मार्दवयशा जी ने समणी जी के प्रति मंगलकामना की। सभा, सिकंदराबाद के अध्यक्ष सुरेश सुराणा, उपाध्यक्ष बाबूलाल बैद, मंत्री सुशील संचेती, महिला मंडल, हैदराबाद की अध्यक्ष अनिता गीड़िया, तेयुप, हैदराबाद के अध्यक्ष प्रवीण श्यामसुखा, टीपीएफ से कोषाध्यक्ष पंकज संचेती, अणुव्रत समिति से राजेंद्र बोथरा, अंजु बैद, चांदबाई, जय सिंह सुराणा ने समणीजी के प्रति मंगलकामना व्यक्त की। साध्वी निर्वाणश्री जी का मंगल संदेश प्राप्त हुआ, उनके प्रति मंगलकामना व्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन लक्ष्मीपत बैद, राकेश सुराणा ने किया।

प्रेक्षाध्यान एवं शरीर विज्ञान एक दिवसीय कार्यशाला

अमदाबाद।

तेयुप एवं प्रेक्षा फाउंडेशन के संयुक्त तत्वाधान में एक दिवसीय कार्यशाला 'प्रेक्षाध्यान एवं शरीर विज्ञान' विषय पर शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, शाहीबाग में आयोजित किया गया। नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया। साध्वी संवेगप्रभा जी ने सुमधुर मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। तेयुप अध्यक्ष ललित बेंगवानी ने स्वागत वक्तव्य प्रदान करते हुए प्रेक्षाध्यान पर अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। श्रेष्ठ कार्यकर्ता संयोजक जवेरीलाल संकलेचा ने प्रेक्षाध्यान का जीवन-विज्ञान का आलंबन बताया साथ ही सभी को प्रतिदिन प्रेक्षाध्यान करने के लिए प्रेरित किया।

शासनश्री साध्वी सरस्वती जी के संसारपक्षीय भ्राता एवं हांसी से समागत वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक मुख्य वक्ता लाजपतराय जैन ने शरीर विज्ञान की जानकारी देते हुए शरीर संरचना के बारे में बारीकी से समझाते हुए शरीर तंत्र पर प्रेक्षाध्यान के प्रभाव की विवेचना की।

कार्यक्रम में तेरापंथ सभाध्यक्ष अशोक सेठिया, अणुव्रत समिति, अहमदाबाद के अध्यक्ष सुरेश बागरेचा सहित २०० से अधिक श्रावक समाज की सूचक उपस्थिति रही। कार्यक्रम के अंत में मंत्री कपिल पोखरना ने सभी के प्रति आभार ज्ञापित किया।

अस्थि चिकित्सा शिविर

पूर्वांचल।

डॉ० धीरज मरोठी की देख-रेख में अस्थि चिकित्सा शिविर का आयोजन एटीडीसी में किया गया। १४ व्यक्तियों ने इस शिविर में चिकित्सा का लाभ लिया। डॉ० धीरज मरोठी ने १५००० से अधिक घुटनों के सफल ऑपरेशन एवं अनगिनत रोगियों का उपचार किया है। एटीडीसी के सह-प्रभारी व तेयुप पूर्वांचल के कार्यसमिति सदस्य हेमंत बैद के विशेष श्रम और उपस्थिति से कैंप अत्यंत सफल रहा। तेयुप, पूर्वांचल-कोलकाता के सहमंत्री राजीव खटेड़ ने भी अपनी सेवाएँ दी।

आत्म साधना का पथ है तप

राजलदेसर।

तप आत्म साधना का पथ है, मोक्ष मंजिल का रथ है, संयम तप आरोग्य मंत्र है, शांति समाधि का तंत्र है। उक्त विचार तेरापंथ भवन में डॉ० साध्वी परमयशा जी के सान्निध्य में ७८ वर्षीय श्रावक शुभकरण बैद द्वारा ४५ दिवसीय तप करने पर आयोजित तप अभिनंदन समारोह में व्यक्त किए।

बैद परिवार के द्वारा गीत की स्वर लहरियों के साथ मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। तप अभिनंदन में पारिवारिकजनों के द्वारा छोटी सी लघु नाटिका की प्रस्तुति दी। ४५ दिवसीय तपस्या के अवसर पर तेमम एवं तेरापंथ कन्या मंडल की ४५ सदस्याओं द्वारा

सुमधुर संगान के साथ ४५ चीजों का तप त्याग एवं नियमों का गुलदस्ता भेंट किया गया।

इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने कहा कि जैन धर्म में तप का विशेष महत्त्व है। त्याग और तप जैन धर्म जैसे संस्कृति का मूल आधार है। इस अवसर पर नायब तहसीलदार सुभाष कुल्हरी ने साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी द्वारा प्राप्त संदेश का वाचन किया। थाना अधिकारी एसएचओ डॉ० महेंद्र सेन, वरिष्ठ विचारक कुंदनमल दाधीच, श्रीराम विद्यालय के व्यवस्थापक भुवनेश्वर शर्मा एवं स्वामी विवेकानंद शिक्षण संस्थान के व्यवस्थापक श्रवण राम एवं अणुव्रत समिति के अध्यक्ष लाभचंद सोनी ने तप

के प्रति अपने भावों की अभिव्यक्ति दी।

सभा के अध्यक्ष नवरत्नमल बैद 'मूथा', सभा के ट्रस्टी पन्नालाल दुगड़, तेयुप के अध्यक्ष मुकेश श्रीमाल, तेमम की अध्यक्ष प्रेम देवी विनायकिया ने अपने भावों से तप की अभ्यर्थना की। साध्वी धर्मयशा जी, साध्वी विनम्रयशा जी, साध्वी मुक्ताप्रभा जी, साध्वी कुमुदप्रभा जी ने तपस्या की अनुमोदना में गीत प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर अनेक सभा-संस्थाओं के पदाधिकारीगण एवं सदस्यगण उपस्थित थे। आभार ज्ञापन तेमम की मंत्री सविता बच्छावत ने किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वीवृंद एवं पवन बोथरा द्वारा किया गया।

जैन संस्कार विधि से मासखमण तपस्या का पारणा

इचलकरंजी।

साध्वी प्रज्ञाश्री जी की प्रेरणा व आशीर्वाद से अशोकचंद लोढ़ा की धर्मपत्नी मंजुदेवी लोढ़ा की मासखमण (२७) की तपस्या का सातापूर्वक पारणा तप अनुष्ठान संपूर्ति संस्कार द्वारा संपूर्ण परिवार की उपस्थिति में संपादित हुआ। संस्कारक पंकज जोगड़ एवं संस्कारक विकास सुराणा ने संपूर्ण जैन विधि से यह कार्यक्रम संपन्न किया।

कार्यक्रम की शुरुआत नवकार महामंत्र से हुई तद्पश्चात वंदना आनंद पुलकित गीतिका का सामुहिक संगान किया गया। तपस्वी द्वारा मंगलभावना पत्रक की स्थापना की गई, वृहद नवकार मंत्र, नव ग्रह मंत्र, मंगलभावना, लोगस के ध्यान पश्चात तपस्वी बहन का पारणा परिवार में सबसे छोटे उनके दोहिते के हाथ से हुआ। संस्कारकों ने जैन विधि का महत्त्व समझाया और प्रभावना व उपहार आदि न देने-लेने का संकल्प करवाया। तपस्वी बहन ने एक साल के लिए आध्यात्मिक प्रत्याख्यान किया। अंत में मंगलपाठ से इस कार्यक्रम की पूर्णाहूति हुई। उपस्थित सभा अध्यक्ष ने अनुमोदना की।

तेजस्विता का उपयोग विनाश में नहीं बल्कि...

(पृष्ठ २ का शेष)

यह तेजोलब्धि एक तरह से तांत्रिक विद्या वाली सी मिलती-जुलती बात है। तांत्रिक चीजों से किसी का विनाश करने का प्रयास न करें। दुर्भावना से तंत्र-मंत्र का प्रयोग नहीं करना चाहिए। शक्ति का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। नवरात्र का समय है। हमें अपने मन में यह भावना रखनी चाहिए कि किसी का बुरा तंत्र-मंत्र-यंत्र, जादू-टोना आदि-आदि के द्वारा किसी का अनिष्ट करने का प्रयास हमें अपने जीवन में नहीं करना चाहिए। प्रवचन से पूर्व पूज्यप्रवर ने अनुष्ठान करवाया।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि साधक रस के आहार का उपयोग नहीं करता। वह अरस आहार करता है। वह तो आहार जीवन निर्वाह करने और शरीर को भाड़ा देने के लिए करता है। रस परित्याग का महत्त्व समझाया। इस परित्याग से इंद्रिय विषयों का संयम हो सकता है। वे गुरु धन्य हो जाते हैं, जिन्हें अच्छे शिष्य मिल जाते हैं। यह एक प्रसंग से समझाया।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि गुरु अज्ञान रूपी अंधकार से ज्ञानी रूपी प्रकाश की ओर ले जाने वाले होते हैं।



अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का आयोजन

भिवानी।

अणुव्रत समिति द्वारा अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का आयोजन किया गया। इसके सफल आयोजन में साध्वी तिलकश्री जी, सहयोगिनी साध्वी महिमाश्री जी एवं साध्वी निर्णयप्रभा जी की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन योग्य भूत बना। तेरापंथी महासभा के उपाध्यक्ष सुरेंद्र जैन 'एडवोकेट', समिति के अध्यक्ष रमेश बंसल, मंत्री ब्रजेश आचार्य, बाबा जगन्नाथ, राजेंद्र कौशिक, लक्ष्मण अग्रवाल, टेकचंद जैन, डॉ० रमाकांत शर्मा एवं अतुल कुमार का श्रम भी सार्थक हो गया।

सांप्रदायिक सौहार्द दिवस : सप्ताह का प्रथम दिन सांप्रदायिक सौहार्द दिवस के रूप में मनाया गया। साध्वी तिलकश्री जी ने कहा कि संप्रदाय को मोह नहीं चाहिए और वसुधैव कुटुम्बकम की भावना से सांप्रदायिक सौहार्द बढ़ेगा। सुरेंद्र जैन एवं रमेश बंसल ने अपने भाव व्यक्त किए। दिव्यांग बच्चों के स्कूल संचालक विजय शर्मा ने भी अपने विचार रखे। लगभग ५५ भाई-बहनों ने भाग लिया।

जीवन-विज्ञान दिवस : हलवासिया विद्या विहार के हॉल में आयोजित हुआ। साध्वी महिमाश्री जी एवं साध्वी निर्णयप्रभा जी ने जीवन-विज्ञान की व्याख्या की और प्रयोग करवाए। आई०आई०टी० पास छात्रा सुधा जैन ने जीवन-विज्ञान गीत की प्रस्तुति दी। विद्यालय के प्रशासक एवं प्राचार्य ने समिति का आभार व्यक्त किया। लगभग ३०० बच्चों एवं संपूर्ण शिक्षण स्टाफ की उपस्थिति रही।

अणुव्रत प्रेरणा दिवस : शहर के प्रतिष्ठित उत्तमी बाई आर्य कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में आयोजित हुआ। साध्वी महिमाश्री जी एवं साध्वी निर्णयप्रभा जी ने अणुव्रत आचार संहिता की व्याख्या की। छात्राओं ने अणुव्रत गीत प्रस्तुत किया। प्राचार्य स्मिता भटनागर ने अणुव्रत को सभी के लिए उपयोगी बताया। लगभग २५० छात्राओं की उपस्थिति रही।

पर्यावरण शुद्धि दिवस : शहर के सबसे बड़े विद्यालय वैश्य मॉडल स्कूल के हॉल में मनाया गया। साध्वी महिमाश्री जी एवं साध्वी निर्णयप्रभा जी ने ओजोन परत में छेद होने से पर्यावरण को खतरा होने की बात कही और पेड़ को मंदिर और भगवान

के समान बताया। साध्वीश्री जी ने विद्यार्थियों को जीवन में एक पेड़ अवश्य लगाने की अपील की। विद्यालय प्रबंधकारिणी अध्यक्ष शिवरतन गुप्ता, सचिव ब्रजलाल सराफ एवं कोषाध्यक्ष पवन बुवानीवाला, विजयकिशन धारेडूवाले, प्रवीण गर्ग, प्राचार्य कमला गुरेजा सहित लगभग ५०० बच्चों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

नशामुक्ति दिवस : इस कार्यक्रम का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। साध्वी तिलकश्री जी ने कहा कि नशा स्टेटस सिंबल नहीं बल्कि नाश का सिंबल है। साध्वी महिमाश्री जी ने नशा के दुष्प्रभावों पर व्याख्यान तथा साध्वी निर्णयप्रभा जी ने गीतिका प्रस्तुत की। समिति के अध्यक्ष रमेश बंसल ने कहा कि नशा नाश का द्वार है। महासभा उपाध्यक्ष सुरेंद्र जैन ने भी नशा न करने की अपील की। ब्रजेश आचार्य ने आभार ज्ञापन किया। लगभग पचास-साठ भाई-बहनों की उपस्थिति रही।

अनुशासन दिवस : इस दिवस का आयोजन अनुशासन का समर्पित श्रीराम पाठशाला निःशुल्क स्कूल में किया गया। साध्वी महिमाश्री जी एवं साध्वी निर्णयप्रभा जी ने अनुशासन के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि एक अच्छा शिष्य ही अच्छा गुरु बन सकता है। अणुव्रत समिति के अध्यक्ष रमेश बंसल ने छोटे-छोटे विद्यार्थियों से अणुव्रत प्रश्नमंच से प्रश्न पूछे जिनका सभी बच्चों ने

सही जवाब दिया। इस स्कूल में जीवन-विज्ञान भी लागू है, इसलिए विद्यार्थी अणुव्रत के नियम, अनुशासन एवं अणुव्रत गीत भी सभी बच्चों को कंठस्थ था। महासभा उपाध्यक्ष सुरेंद्र जैन जो इस स्कूल के संचालक ट्रस्ट के अध्यक्ष हैं, ने बच्चों के अनुशासन को स्तुत्य बताया। समिति के मंत्री ब्रजेश आचार्य ने बच्चों को अनुशासन की शिक्षा दी। लगभग ३०० छात्र-छात्राओं एवं शिक्षण स्टाफ की उपस्थिति रही।

अहिंसा यात्रा : अहिंसा दिवस तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी तिलकश्री जी के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वीजी ने भगवान महावीर, महात्मा गांधी और लालबहादुर शास्त्री को अहिंसा का पुजारी बताया। साध्वीश्रीजी ने सभी को जीवन में अहिंसा का पालन करने की शिक्षा दी। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रमुख साहित्यकार डॉ० रमाकांत शर्मा ने कहा कि महात्मा गांधी के पास केवल एक भगवान महावीर की अहिंसा का शस्त्र था और वे उसके कारण विश्व में छा गए। उन्होंने कुछ मुक्तक भी सुनाए। समिति के अध्यक्ष रमेश बंसल ने उपस्थित जनों से चमड़े से बनी वस्तुओं का उपयोग न करने की अपील की। उन्होंने वैचारिक हिंसा से भी बचने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि मन, वचन और कर्म से किसी का बुरा न सोचें और न करें, यही अहिंसा का मंत्र है।

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह

कोलकाता, हावड़ा।

अणुव्रत विश्व भारती द्वारा निर्देशित अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह अणुव्रत समिति, कोलकाता एवं अणुव्रत समिति हावड़ा ने पूरे उत्साह से विभिन्न स्थानों की सार्थक सहभागिता से आयोजन किया। अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का कार्यक्रम साध्वी स्वर्णरेखा जी के सान्निध्य में सॉल्टलेक स्थित गुप्ता भवन में आयोजित हुआ।

साध्वीश्री जी ने छोटे-छोटे बच्चों की छतरी के अंतर्गत अपने विचार व्यक्त किए। विशिष्ट वक्ता प्रकाश चंडालिया ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। अणुविभा के उपाध्यक्ष प्रताप दुगड़, रतन दुगड़, मीडिया प्रभारी, पंकज दुधोड़िया एवं भीखमचंद पुगलिया, कोलकाता सभा अध्यक्ष बुधमल लुणिया, अणुव्रत समिति, कोलकाता अध्यक्ष प्रदीप सिंघी, मंत्री नवीन दुगड़ आदि अनेक पदाधिकारीगण की उपस्थिति में कार्यक्रम का सफल आयोजन हुआ।

ज्ञानशाला के बच्चों ने अपने संवाद के द्वारा धार्मिक एकता का संदेश देते हुए लघु संवाद प्रस्तुत किया। सभी श्रोतागण इस कार्यक्रम से लाभान्वित हुए।

मासखमण तप अभिनंदन

केसिंगा-ओड़िशा।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा केसिंगा के तत्वावधान में स्थानीय तेरापंथ भवन में मासखमण तप अभिनंदन समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नवापाड़ा के विधायक राजेंद्र ढोलकिया थे। सीमा पुरुषोत्तम ने जैन ५९ दिन की तपस्या व गायत्री शुभंकर जैन ने ३९ दिन की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा कि धर्म का पहला व आखिरी कदम तपस्या है। जिस प्रकार दूध में रहे पानी को हंस अलग करता है वैसे ही तप जीवों के कर्म रूपी मल को दूर करता है। तपस्या प्रदर्शन के लिए नहीं आत्मनिर्दर्शन के लिए करनी चाहिए।

इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने तपस्वियों के तप की अनुमोदना करते हुए तप अभिनंदन में संकल्प ग्रहण करने की बता कही। बाल मुनि कुणाल कुमार जी ने तप गीत का संगान कर सबको मंत्रमुग्ध कर दिया। इस अवसर पर विधायक राजेंद्र ढोलकिया ने तपस्वियों का अभिनंदन करते हुए कहा कि जैन धर्म में तपस्या का विशेष महत्त्व है। ओड़िशा प्रांतीय तेरापंथी सभा के अध्यक्ष मुकेश जैन ने तप अनुमोदना में विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर स्वागत भाषण तेरापंथ सभा अध्यक्ष मंगतराम जैन ने किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ कन्या मंडल के मंगलाचरण से हुआ। तप अनुमोदना में तेरापंथ महिला मंडल की अध्यक्षा अंकिता जैन, तेयुप मंत्री विकास जैन, स्थानकवासी संघ के अध्यक्ष बसंत जैन, प्रांतीय सभा के महामंत्री अनूप जैन, अणुव्रत समिति के अध्यक्ष शुभंकर जैन आदि अनेक व्यक्तियों ने विचारों व गीतों के माध्यम से तपस्वियों का अभिनंदन किया। तेरापंथ महिला मंडल व तपस्वियों के पारिवारिक महिलाओं ने अभिनंदन गीतों का संगान किया।

साध्वीप्रमुखाश्री कनकप्रभा जी के संदेशों का वाचन उपाध्यक्ष समकुमार जैन व महिला मंडल की सहमंत्री सरोज जैन ने किया। अभिनंदन पत्र का वाचन नेमीचंद जैन ने किया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री जय भगवान जैन ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद व अभिषेक जैन ने किया। इस अभिनंदन समारोह में आसपास के क्षेत्रों के बड़ी संख्या में श्रद्धालुगण उपस्थित रहे।

लोगस्स तथा नमस्कार महामंत्र प्रतियोगिता का आयोजन

जीन्द।

तेरापंथ भवन में शासनश्री साध्वी कुंथुश्री जी के सान्निध्य में तेयुप तथा महिला मंडल, जीन्द के संयुक्त तत्वावधान में लोगस्स तथा नमस्कार महामंत्र की प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। साध्वीश्री जी के मंत्रोच्चार से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। साध्वी कुंथुश्री जी ने कहा कि लोगस्स का पाठ महत्त्वपूर्ण है, इसमें चौबीस तीर्थंकरों की स्तुति है। यह सप्तपदी मंत्र है। लोगस्स में कहा गया है कि मुझे आरोग्य, शरीर का आरोग्य मन की स्वस्थता मिले। बोधि मिले, चेतना मिले, समाधि मिले, जो समाधि में चला जाता है वह आधि, व्याधि, उपाधि से मुक्त हो जाता है।

नमस्कार महामंत्र सब पापों को नाश करने वाला है। चौदह पूर्वों का सार है। इसकी साधना महान आराधना है। इसमें अर्हत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय तथा साधुओं को नमस्कार किया गया है। सभी प्रतियोगी पूरी तैयारी के साथ आए, उत्साह से भाग लिया। प्रतियोगिता की प्रस्तुति सुंदर रही। कार्यक्रम की रूपरेखा बनाने में सर्वाधिक श्रम साध्वी सुलभयशा जी का रहा। कार्यक्रम में निर्णायक की भूमिका डॉ० अनिल जैन, डॉ० सुरेश जैन, महिला मंडल अध्यक्ष कांता मित्तल ने निभाई। दोनों प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त करने वालों को पुरस्कृत किया गया। निर्णायकों को महिला मंडल, जीन्द से साहित्य से सम्मानित किया। कार्यक्रम को सफल बनाने में कुणाल मित्तल, राजेश जैन, गौरव जैन का अथक परिश्रम रहा। संचालन कुणाल मित्तल ने किया। कार्यक्रम के प्रायोजक श्रीचंद जैन को तेरापंथ सभा द्वारा साहित्य से सम्मानित किया गया।

नशामुक्ति अभियान

नवी मुंबई।

अणुव्रत समिति, मुंबई क्षेत्र नवी मुंबई के द्वारा नशामुक्ति अभियान, अणुव्रत समिति से उपासक जसराज छाजेड़ और इकबाल कवारे की उपस्थिति रही। सभी ग्रामवासियों को नशामुक्त जीवन जीने की प्रेरणा दी। नशे से होने वाले नुकसान के बारे में विस्तार से समझाया, जिससे सभी ग्रामीणों पर प्रभाव पड़ा। महाड रायगढ़ फाटा के आसपास के बाढ़ग्रस्त गाँव में लगभग ३०० परिवार को नशामुक्ति की प्रेरणा देकर नशामुक्ति की राह दिखाई। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए अणुव्रत प्रेमी प्रकाश संचेती, सुरेश बाफना, अणुव्रत नवी मुंबई संयोजक पवन परमार, समाज एवं पूरे अणुव्रत परिवार का अच्छा सहयोग रहा।



अभातेयुप योगक्षेम योजना

सत्र 2019-21

* अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् मुम्बई साथीगण	(₹75,00,000)
* अभातेयुप प्रबंध मंडल सत्र 2017-19	(₹31,00,000)
* श्री मदनलाल महेन्द्र तातेड़, मुम्बई	(₹13,00,000)
* श्री कन्हैयालाल विकासकुमार बोथरा, लाडनू-इस्लामपुर	(₹11,00,000)
* श्री अशोक श्रेयांश बरमेचा, तारानगर-हैदराबाद	(₹11,00,000)
* श्री फतेहचंद-संतोष देवी, धीरज, पूजा, अहम सेठिया, लुधियाना	(₹5,51,000)
* श्री सागरमल दीपक श्रीमाल, देवगढ़-बड़ौदा	(₹5,00,000)
* श्री उमरावमल, प्रमोद, महेन्द्र, नरेन्द्र छाजेड़, रामगढ़ शेखावाटी-कोलकाता-जयपुर	(₹5,00,000)
* श्री माणकचंदजी सतीशजी ललितजी चोरड़िया (अमराईवाड़ी ओढ़व)	(₹5,00,000)

दानदाताओं का सम्मान एवं डिजिटल एप का शुभारंभ

सूरत।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र के साथ हुई। तेयुप भजन मंडली ने मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। साध्वी लब्धिश्री जी ने कहा कि आज के डिजिटल युग में डिजिटल एप सभी के लिए उपयोगी सिद्ध होता है।

तेयुप के अध्यक्ष गौतम बाफना ने अपने स्वागत वक्तव्य में पधारें हुए सभी दानदाता, पूर्व अध्यक्ष, सभा-संस्थाओं के पदाधिकारियों का स्वागत किया। तेयुप, सूरत के मंत्री अभिनंदन गादिया ने आचार्य महाश्रमण चिकित्सालय में चल रही सेवाओं की जानकारी दी और दानदाताओं से यह अपील की कि उनका सहयोग हमें निरंतर प्राप्त होता रहे। अरुण कांनूंगा और सौरव पटावरी द्वारा

तैयार किया हुआ आचार्य महाश्रमण चिकित्सालय का वीडियो दिखाया गया। उसके आद भक्तिमय हाउसिंग का प्रारंभ किया गया और उसके साथ ही दानदाताओं का सम्मान भी किया गया।

डिजिटल टीम के प्रभारी दीपक मेहता ने एप के बारे में विस्तृत जानकारी दी तथा एप का शुभारंभ चीफ मैनेजिंग ट्रस्टी बालचंद बेताला, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष हरीश कावड़िया, तेयुप के अध्यक्ष गौतम बाफना, टीपीएफ की अध्यक्ष भारती छाजेड़ के द्वारा किया गया।

आचार्य महाश्रमण अक्षय तृतीया व्यवस्था समिति के अध्यक्ष संजय सुराणा ने अपने वक्तव्य में तेयुप को नवीन चिकित्सालय के लिए जो भी अर्थ का सहयोग होगा उसके लिए उन्होंने अपनी

स्वीकृति प्रदान की और तेयुप के सभी कार्यों में तन-मन और धन से जुड़ने का विश्वास दिलाया।

कार्यक्रम में विशेष उपस्थिति सरगम के फाइनलिस्ट की भी रही उन्हें भी तेयुप द्वारा स्मृति चिह्न भेंट किया गया। कार्यक्रम में पूर्व अध्यक्षों के साथ चीफ मैनेजिंग ट्रस्टी बालचंद बेताला, तेरापंथी सभा के अध्यक्ष हरीश कावड़िया और उनकी संपूर्ण टीम, अणुव्रत समिति, ग्रेटर सूरत के अध्यक्ष विजयकांत खाटेड और मंत्री सुनील श्रीश्रीमाल, टीपीएफ की अध्यक्ष भारती छाजेड़ और मंत्री अखिल मारू तथा संपूर्ण कार्यकारिणी उपस्थित रही। कार्यक्रम के अंत में तेयुप के उपाध्यक्ष महेश संकलेचा ने सभी का आभार व्यक्त किया।



संस्कृति का संरक्षण - संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि - अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

नोएडा।

उमेद सिंह हीरावत के सुपौत्र व पारस-सुरभि हीरावत पड़िहारा निवासी नोएडा प्रवासी के पुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से संस्कारक कमल सेठिया व संस्कारक हेमराज राखेचा ने संपूर्ण विधि एवं मंगलमंत्रोच्चार द्वारा कार्यक्रम को संपादित करवाया।

तेयुप, दिल्ली की तरफ से आभार ज्ञापित किया गया। हीरावत परिवार ने संस्कारकों का आभार ज्ञापन किया। पूरे परिवार ने अपनी स्वेच्छा अनुसार त्याग-प्रत्याख्यान किए।

नूतन प्रतिष्ठान शुभारंभ

सूरत।

भादरा निवासी-पालसाना, सूरत प्रवासी माणकचंद सिंधी के सुपुत्र दीपक व प्रकाश सिंधी के नूतन प्रतिष्ठान का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष कुमार मालू व विनीत सामसुखा ने संपूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार से सानंद संपन्न करवाया। सभी ने संस्कारकों की प्रेरणा से अपने सामर्थ्य अनुसार त्याग-प्रत्याख्यान किया।

दीपक व प्रकाश व उनके पूरे परिवार ने संस्कारकों व सभी पारिवारिकजनों का आभार ज्ञापन किया। तेयुप, सूरत द्वारा मंगलभावना पत्रक भेंट किया गया।

नूतन गृह प्रवेश

अहमदाबाद।

गौतम चोरड़िया के जैन संस्कार विधि से नूतन गृह प्रवेश संस्कारक आनंद बोथरा, जागृत दुगड़ एवं दिनेश बागरेचा ने मांगलिक मंत्रोच्चार के साथ मंगलभावना पत्र स्थापित कर गृह प्रवेश विधि को संपादित किया। पारिवारिक महिलाओं ने सुमधुर मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। तेयुप अध्यक्ष ललित बेंगवानी ने चोरड़िया परिवार को शुभकामनाओं के साथ मंगलकामना प्रेषित की।

परिषद की ओर से चोरड़िया परिवार को प्रशस्ति पत्र के साथ मंगलभावना यंत्र भेंट किया। कार्यक्रम में तेयुप कार्यसमिति सदस्य विक्रम दुगड़ की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन तेयुप मंत्री कपिल पोखरना ने किया। चोरड़िया परिवार की ओर से विक्रम दुगड़ ने तेयुप, अहमदाबाद एवं संस्कारकों के प्रति आभार ज्ञापित किया।

निःशुल्क रक्त जाँच एवं बॉडी एनालिसिस कैंप

सूरत।

आचार्य महाश्रमण चिकित्सा एटीडीसी, सूरत में निःशुल्क रक्त जाँच एवं बॉडी एनालिसिस कैंप का आयोजन किया गया, जिसमें रक्त जाँच में ब्लड शुगर, ब्लड ग्रुप तथा क्रिपेटिनाइन/कोलेस्ट्रॉल की जाँच की गई, ३५ लोगों ने इन निःशुल्क सेवाओं का लाभ लिया।

बॉडी एनालिसिस में १५ प्रकार के विभिन्न शारीरिक हेल्थ रिपोर्ट आधुनिक मशीन द्वारा किए गए, जिसमें ५४ लोगों ने निःशुल्क सेवा का लाभ लिया। कैंप में पधारें हुए पेशेंट ने तेयुप, सूरत द्वारा एएमसी में दी जा रही सुव्यवस्थित व्यवस्था के लिए अपने भाव व्यक्त करते हुए शुभकामनाएँ भी प्रेषित की। एएमसी संयोजक ने पधारें हुए सभी पेशेंट को एएमसी चिकित्सालय में उपलब्ध अन्य सेवाओं से भी परिचय करवाया और आगे भविष्य में अन्य विविध प्रकार के हेल्थ चेक-अप कैंप के आयोजन का भी आश्वासन दिया।

त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर

मैसूर।

तेरापंथ सभा के तत्वावधान में त्रिदिवसीय प्रेक्षाध्यान शिविर के शुभारंभ के अवसर पर साध्वी डॉ० मंगलप्रज्ञा जी ने शिविरार्थियों को ध्यान का प्रयोग करवाया एवं उपसंपदा स्वीकार करवाई। उन्होंने कहा कि प्रेक्षाध्यान शारीरिक, भावनात्मक और बौद्धिक स्वास्थ्य प्रदान करता है। यदि आत्मदर्शन की दिशा में प्रस्थान करना है तो ध्यान की साधना महत्त्वपूर्ण है।

भविष्य की निरर्थक कल्पना व्यक्ति के विकास में बाधक बनती है। प्रेक्षाध्यान साधक शिविर के दौरान संयम

की विशेष साधना करें। मित-भाषण का प्रयोग करें। अनावश्यक प्रवृत्ति में समय व्यर्थ न करें।

मुंबई से समागत वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक पारसमल दुगड़ का परिचय कन्या मंडल प्रभारी संतोष कोठारी ने एवं प्रेक्षा प्रशिक्षिका विमला दुगड़ का परिचय तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष मंजु दक ने दिया। तेरापंथ सभाध्यक्ष शांतिलाल कटारिया ने शिविर संचालकों एवं शिविरार्थियों का स्वागत किया। प्रशिक्षिका विमला ने कहा कि प्रेक्षाध्यान उच्च कोटि की साधना पद्धति है। प्रेक्षा प्रशिक्षक पारसमल दुगड़ ने कहा कि प्रेक्षाध्यान का अर्थ है—राग-द्वेष से

मुक्त होकर देखना। प्रेक्षाध्यान अनंत शांति और आनंद के जागरण का महत्त्वपूर्ण आयाम है। साध्वी सुदर्शनप्रभा जी, साध्वी सिद्धियशा जी, साध्वी राजुलप्रभा जी, साध्वी चैतन्यप्रभा जी एवं साध्वी शौर्यप्रभा जी ने प्रेक्षाध्यान गीत का संगान किया। साध्वी शौर्यप्रभा जी ने आसन-प्राणायाम की सैद्धांतिक जानकारी देते हुए उनका महत्त्व बताया। साध्वी राजुलप्रभा जी ने मंच संचालन किया। शिविर संभागियों को आसन, मुद्रा विज्ञान, कायोत्सर्ग, ध्यान, अनुप्रेक्षा आदि के विशेष प्रयोग करवाए।

परिवार शिविर एवं पुरस्कार वितरण समारोह

आगापुरा, हैदराबाद।

ज्ञानबाग कॉलोनी आगापुरा में परिवार शिविर के भव्य आयोजन ने सबका मन मोह लिया। 'सौगात संस्कारों की' विषय पर अपने उद्गार व्यक्त करते हुए साध्वी निर्वाणश्री जी ने कहा—फैशन और व्यसन की संस्कृति ने हमारे संस्कारों को गिरफ्त में लिया है। बच्चों में प्रारंभ से सद्संस्कार कैसे जागे—यह जिम्मा अभिभावकों का है। जीवन की हर प्रवृत्ति में संस्कारों की झलक हो, तभी जीवन संवरेगा।

साध्वी निर्वाणश्री जी एवं सहवर्ती साध्वियों की प्रेरणा से संवत्सरी उपवास करने वाले नन्हे-मुन्ने व पौषध करने वाले कन्या-किशोरों को पुरस्कृत किया गया। इस अवसर पर आगापुरा की कन्याओं

ने पौषध कर एक रिकॉर्ड बनाया है। ४०-४० लड़कियों द्वारा पौषध की साधना करना सुखद अनुभव है। मैं सभी कन्याओं को साधुवाद देती हूँ।

साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने अपना संयोजकीय वक्तव्य दिया। तेरापंथ सभा, सिकंदराबाद के अध्यक्ष सुरेश सुराणा ने कहा—पर्युषण के पश्चात ऐसा अद्भुत नजारा देखकर मैं अभिभूत हूँ। साध्वी निर्वाणश्री जी एवं साध्वी योगक्षेमप्रभा जी आदि के श्रम को साकार कर पा रहे हैं। इस अवसर पर उपवास करने वाले २५ बच्चों व ४२ कन्याओं (पौषध) को पुरस्कार दिया गया। पुरस्कार हस्तिमल, अजित, सुजित, कोठारी की ओर से थे।

कन्या मंडल की कन्याओं ने लघु

नाटिका प्रस्तुत की। साध्वी लावण्यप्रभा जी, साध्वी कुंदनयशा जी, साध्वी मुदितप्रभा जी व साध्वी मधुरप्रभा जी ने गीत का संगान किया। तुलसी महाप्रज्ञ फाउंडेशन कांदिवली, मुंबई के सह-कोषाध्यक्ष रमेश राठौड़, हर्षलता दुधोड़िया, सुमन दुगड़ व प्रेम सुराणा ने गीत का संगान किया। पुरस्कार वितरण का संचालन नेहा बरड़िया व हर्षिता जम्मड़ ने किया। मुख्य मंच संचालन साध्वी डॉ० योगक्षेमप्रभा जी ने किया।

इस कार्यक्रम में तेरापंथी सभा के अध्यक्ष, मंत्री परामर्शक, कोषाध्यक्ष आदि के साथ सभा एवं आगापुरा श्रावक समाज की विशेष उपस्थिति रही। अनेक कार्यकर्ताओं के परिश्रम से कार्यक्रम भव्य एवं रोचक बन गया।



आत्मा के आसपास

□ आचार्य तुलसी □

प्रेक्षा : अनुप्रेक्षा

शिविर साधना



(पिछला शेष) एक बार गुरु गोविंदसिंहजी के शिष्य सामूहिक रूप में गुरु के सामने उपस्थित हुए। उन्होंने अपनी समस्या प्रस्तुत करते हुए कहा—‘हम प्रतिदिन भगवान का भजन करते हैं पर हमें कोई लाभ नहीं होता। इतने वर्षों से हम साधना कर रहे हैं, उसका कोई परिणाम क्यों नहीं आता?’ गुरु गोविंदसिंहजी बोले—‘तुम्हारा प्रश्न मेरी समझ में आ गया है। मैं इसका उत्तर कुछ समय बाद दूँगा।’ शिष्य चले गए।

कुछ दिनों बाद गुरुजी ने शिष्यों को बुलाकर कहा—‘एक मटका ताड़ी से भरकर लाओ और उससे कुल्ले कर मटके को खाली कर दो।’ शिष्य गए। एक बड़ा मटका ताड़ी से भरकर लाए। अब वे उस मटके के पास बैठकर कुल्ले करने लगे। देखते-देखते उन्होंने सारी ताड़ी मुँह से लेकर नीचे गिरा दी। मटका खाली कर वे गुरु के पास पहुँचे। गुरुजी ने पूछा—‘तुमने सारी ताड़ी समाप्त कर दी?’ शिष्यों की स्वीकृति पाकर वे फिर बोले—‘इतनी ताड़ी थी, उससे तुमको नशा नहीं आया?’ शिष्य विस्मित होकर गुरु जी की ओर देखने लगे। गुरुजी की दृष्टि से जिज्ञासा झलक रही थी। शिष्यों के लिए यह नई स्थिति थी। क्योंकि वे जब कभी गुरु के चरणों में उपस्थित होते, अपनी जिज्ञासा और समस्या लेकर आते थे। आज उन्हें गुरु की जिज्ञासा को समाहित करना था। कुछ क्षण सोचकर वे बोले—‘गुरुदेव! हमने ताड़ी को गले से नीचे उतारा ही नहीं, तब नशा कैसे आएगा?’

गुरुजी ने उनकी ही बात से उनके प्रश्न का उत्तर देते हुए कहा—शिष्यो! तुमने भगवान का भजन किया है, पर ऊपर-ऊपर से। भगवान के नाम को गले से नीचे उतारा ही नहीं, तब तुम्हें लाभ कैसे होगा? जब तक भगवद्-भजन के साथ तुम्हारा मन नहीं जुड़ेगा, तुम अंतःकरण से भगवान का नाम नहीं लोगे, भगवान के नाम के पीछे पागल नहीं बन जाओगे, तब तक तुम्हें कोई लाभ नहीं होगा, उक्त घटना के संदर्भ में यह तथ्य स्पष्ट हो जाता है कि धर्म की गहराई में उतरे बिना धर्मारोधाना से होने वाला लाभ नहीं मिल सकता। धर्म की गहराई में जाने के लिए शिविर-साधना एक प्रशस्त प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया से गुजरने के बाद वर्तमान के लिए धर्म कितना उपयोगी है, यह प्रश्न शेष नहीं रहता।

परिवर्तन की प्रक्रिया

परिवर्तन पाते कई, जीवन में आमूल।
आ जाती है समझ में, स्वयं स्वयं की भूल।।
नैसर्गिक आस्था निमल, दृढ़ दृढतम संकल्प।
अप्रतिहत गति से चले, जो अभ्यास अनल्प।।
अनुशासित संयत विरत, मानस हो तैयार।
शिविर-साधना का बने, तब ऊँचा आधार।।

प्रश्न : प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करने के लिए शिविर-साधना का क्रम चल रहा है। शिविरों में साधक को साधना का वातावरण मिलता है, मार्गदर्शन मिलता है और साधना के अनुरूप साधना-सामग्री भी प्राप्त होती जाती है। इतनी सुविधा मिलने के बाद शिविर में साधना करने वाले साधक के जीवन में कोई परिवर्तन आता है या नहीं?

उत्तर : परिवर्तन जीवन का मूल मंत्र है। कोई भी व्यक्ति जैसा होता है, वैसा नहीं रहता। रहना भी नहीं चाहिए। बच्चा किशोर होता है, युवा होता है, प्रौढ़ होता है और वृद्ध होता है। परिवर्तन की इस प्रक्रिया से हर व्यक्ति को गुजरना ही होता है। यह जीवन का अनिवार्य क्रम है। परिवर्तन केवल अवस्था का ही नहीं होता, भीतर और बाहर दोनों ओर से होता है। ऊपर से शरीर की त्वचा बदलती है तो भीतर से शरीर के सभी धातु बदलते हैं। शरीर में होने वाले रासायनिक परिवर्तन से उसके विचारों में बदलाव आता है, आदतों में बदलाव आता है और स्वभाव में बदलाव आता है। इस बदलाव का व्यक्ति के व्यक्तित्व-निर्माण पर पूरा प्रभाव पड़ता है।

व्यक्ति अपना बौद्धिक विकास चाहता है। वह युग के अनुरूप शिष्टता का विकास चाहता है। अपनी आदतों में परिष्कार करने के लिए भी वह उत्सुक रहता है। आदतों का बदलना आज का बहुत बड़ा प्रश्न है। परिवार और समाज में सामंजस्य स्थापित करने के लिए स्वभाव-परिवर्तन की किसी मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया को समझना और उसका प्रयोग करना बहुत आवश्यक है। अन्यथा एक ही परिवार के सदस्यों में इतना मन-मुटाव हो जाता है कि वह जीना मुश्किल कर देता है। परस्पर संदेह उत्पन्न होता है, गलतफहमियाँ बढ़ती हैं, उनका निराकरण न होने से आक्रोश बढ़ता है जो मानसिक द्वंद्व को जन्म देता है। ऐसी स्थिति में मनःस्थिति को सामान्य बनाए रखने के लिए आदतों को बदलना बहुत जरूरी है।

कुछ लोगों को नशे की आदत हो जाती है। मादक पदार्थों के सेवन से उस आदत को पोषण मिलता है। आदत पुष्ट होने के बाद मादक द्रव्यों का अतिरिक्त सेवन होने लगता है। मात्रा और काल दोनों का अतिक्रमण होने के बाद व्यक्ति इतना परवश हो जाता है कि आदत छोड़ना उसके वश की बात नहीं रहती। नशे की आदत से शारीरिक, मानसिक और आर्थिक सभी प्रकार की कठिनाइयाँ बढ़ जाती हैं। शरीर-तंत्र की अव्यवस्था का सीधा प्रभाव मन पर होता है। इसी प्रकार आर्थिक असंतुलन का भार मन पर पड़ता है। मानसिक असंतुलन से पारिवारिक कलह का जन्म होता है। झुंझलाहट का उद्भव होता रहता है। इन सब समस्याओं का समाधान ध्यान के द्वारा पाया जा सकता है।

(क्रमशः)

साँसों का इकतारा

□ साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा □

(२५)

पुलकित धरा और आकाश।
प्राणों में अभिनव उच्छ्वास।।

तुम भविष्य की उजली आशा
तुम पर टिका हुआ विश्वास
कैसी नई बहारें लाए
किस दुनिया के तुम मधुमास
छाया कण-कण में उल्लास।।

मानव मानव बनकर जीए
चला रहे अणुव्रत अभियान
नई उषाएँ उतरे नभ से
करते रहते अनुसंधान
फैला जग में नया प्रकाश।।

जग अशांत है शांतदूत अब
सुख की राह दिखाओ तुम
भूल रहे जो आपा अपना
उनको मंत्र सिखाओ तुम
कर पाएँ उत्तम आयास।।

आँखों में आलोक आंजकर
तुमने इस जग को देखा
परंपरा को पोषण देकर
खींच रहे अभिनव रेखा
कैसा अद्भुत है विन्यास।।

(२६)

क्रांति का अध्याय जो तुमने लिखा है
वह समय के भाल पर अंकित रहेगा
शांति का दरिया तुम्हारे हृदय में जो
लोक जीवन की धरा पर वह बहेगा।

हाशिये पर खड़े मानव को निहारा
सहज बेचैनी बढ़ी मन में तुम्हारे
विश्व का स्वामी हुआ क्यों विवश इतना
प्रश्न युग की अरगनी पर ढेर सारे
दी दिशा तुमने नई युग चेतना को
सृष्टि का इतिहास यह खुद ही कहेगा।।

आदमी है गौण और वरेण्य वैभव
नहीं कीमत आदमी की यहाँ कोई
अर्थ को है प्राप्त सिंहासन समुन्नत
किंतु मूल्यों ने निजी पहचान खोई
भोर की किरणें लिए शिकवा खड़ी हैं
इस विषमता को कहाँ तक नर सहेगा।।

तुम अटल संकल्प हो तुम अतुल साहस
हर असंभव को बना संभव दिखाते
तुम परम पुरुषार्थ की साकार प्रतिमा
गीत सिरजन के सरस सबको सुनाते
दिग्विजय यात्रा तुम्हारी है विलक्षण
दुराचारों का किला निश्चित ढहेगा।।

(क्रमशः)



संबोधि

□ आचार्य महाश्रमण □

आज्ञावाट

भगवान् प्राह

(पिछला शेष) इससे यह स्पष्ट फलित होता है कि जीना अच्छा भी है और बुरा भी; मरना अच्छा भी है और बुरा भी। जो शब्द जितना अधिक व्यवहृत हो जाता है, उतना ही अधिक वह रूढ़ बन जाता है। संयम की जो गरिमा प्रारंभ में उपलब्ध थी वैसी आज नहीं है। वह रूढ़ हो गया। यह केवल संयम शब्द के साथ ही ऐसा हुआ हो यह नहीं, सबके साथ ही कालांतर में ऐसा हो जाता है। जितने भी क्रियाकांड आज व्यवहृत हैं, उनके प्रवृत्ति-काल में एक सौंदर्य था, जीवंतता थी और चैतन्य था। कालचक्र के प्रवाह से वे शव बनकर रह गए, चैतन्य चला गया।

संयम का अर्थ है—निष्क्रियता, क्रिया का सर्वथा निरोध हो जाना। इसका फलितार्थ होता है—शुद्धात्मा की उपलब्धि, किंतु यह भी स्पष्ट है कि पूर्ण अक्रियत्व प्रथम चरण में ही उपलब्ध नहीं होता। उसके लिए क्रमशः आरोहण की अपेक्षा होती है। यद्यपि संयम का पूर्ण ध्येय वही है, किंतु प्राथमिक अभ्यास की दृष्टि से व्यक्ति को अपनी अशुभ प्रवृत्तियों का संवरण करना होगा। महाव्रत, अणुव्रत आदि की साधना अशुभ-विरति की साधना है। जैसे-जैसे साधक आगे बढ़ता है सामायिक, समता, संवर आता है और इंद्रिय और मन का निरोध करने में कुशल होता चला जाता है। एक क्षण आता है कि वह बाहर से सर्वथा शून्य-बेहोश तथा अंतर में पूर्ण सचेतन होता है। यही क्षण शुद्ध स्वात्मोपलब्धि का है। जहाँ बाह्य आकर्षणों का आधिपत्य स्वतः ध्वंस हो जाता है, वही वास्तविक संयम है।

(१०) हिंसाऽनृतं तथा स्तेयाऽब्रह्मचर्यपरिग्रहाः।
ध्रुवं प्रवृत्तिरेतेषां, असंयम इहोच्यते।।

हिंसा, असत्य, चौर्य, अब्रह्मचर्य और परिग्रह की प्रवृत्ति असंयम कहलाती है।

(११) ऐतेषां विरतिः प्रोक्तः, संयमस्तत्त्ववेदिना।
पूर्णा सा पूर्ण एवासौ, अपूर्णयाञ्च सौशतः।।

तत्त्वज्ञों ने हिंसा आदि की विरति को 'संयम' कहा है। पूर्ण विरति से पूर्ण संयम और अपूर्ण विरति से आंशिक संयम होता है।

जो व्यक्ति हिंसा में रचा-पचा रहता है, वह असंयमी है; जो इनका आंशिक नियंत्रण करता है वह संयमासंयमी है, श्रावक है और जो इनका पूर्ण त्याग करता है वह संयमी है, साधु है। जितने अंशों में उनका त्याग होता है, उतने अंशों में संयम की प्राप्ति होती है और जितना अत्याग-भाव है वह असंयम है।

(१२) पूर्णस्याराधकः प्रोक्तः, संयमी मुनिरुत्तमः।
अपूर्णांराधकः प्रोक्तः, श्रावकोऽपूर्णसंयमी।।

पूर्ण संयम की आराधना करने वाला संयमी उत्तम मुनि कहलाता है और अपूर्ण संयम की आराधना करने वाला अपूर्ण संयमी या श्रावक कहलाता है।

(क्रमशः)

अवबोध

□ मंत्री मुनि सुमेरुमल 'लाडनू' □

(२) दर्शन (सम्यक्त्व) मार्ग

प्रश्न-२७: सम्यक्त्व के आचार कितने हैं?

उत्तर : सम्यक्त्व के आठ आचार हैं—

- | | | |
|---------------------|---|---|
| (१) निश्शंकित | — | वीतराग वचनों पर दृढ़ आस्था रखना |
| (२) निष्कांक्षित | — | कुमत की वांछा न करना |
| (३) निर्विचिकित्सित | — | धर्म के फल में संशय न करना |
| (४) अमूढदृष्टि | — | पर दर्शन की समृद्धि देखकर न फँसना |
| (५) उपवृंहण | — | साधर्मिक का गुणोत्कीर्तन करना |
| (६) स्थिरीकरण | — | धर्म के पथ से विचलित व्यक्तियों को पुनः धर्म में स्थिर करना |
| (७) वात्सल्य | — | गुरु, तपस्वी, शैक्ष, ग्लान आदि की विशेष सेवा करना |
| (८) प्रभावना | — | वीतराग शासन की महिमा बढ़ाना |

(क्रमशः)

उपासना

(भाग - एक)

□ आचार्य महाश्रमण □

आचार्य पादलिप्त



सद्योत्तर प्रतिभा मुनि नागेंद्र के पास थी। गुरु द्वारा उच्चारित शब्द को अर्थान्तरित कर देने हेतु मुनि नागेंद्र ने नम्र होकर कहा—'आर्य! पलित्त में एक मात्रा बढ़ाकर उसको पालित्त बना देने का मुझे आप द्वारा प्रसाद प्राप्त हो। मात्रा-वृद्धि से पलित्तओ का संस्कृत रूप पादलिप्तक हो जाता है। पादलिप्तक से मुनि नागेंद्र का तात्पर्य था—'गगनगमनोपायभूतां पादलेपविद्यां मे देहि येनाहं 'पादलिप्तक' इत्यभिधीये।' मुझे गगन-गमन में उपायभूत पादलेप-विद्या का दान करें जिससे मैं पादलिप्तक कहलाऊँ।

एक मात्रा की वृद्धि से पलित्त शब्द को विलक्षण अर्थप्रदायिनी मुनि नागेंद्र की प्रज्ञा पर गुरु प्रसन्न हुए। उन्होंने गगन-गामिनी विद्या से विभूषित 'पादलिप्तो भव' का शुभ आशीर्वाद शिष्य को दिया। तब से मुनि नागेंद्र का नाम पादलिप्त प्रसिद्ध हो गया। दस वर्ष की अवस्था में गुरु ने उन्हें आचार्य पद पर नियुक्त किया। आचार्य पादलिप्त के शिशुकाल में ही गुरु ने उनकी माता से बालक के संघमुख्य होने का संकेत कर दिया था। गुरु की भविष्यवाणी सत्य प्रमाणित हुई।

धर्मसंघ की प्रभावना के लिए गुरु के आदेश से आर्य पादलिप्त एक बार मथुरा में गए। कुछ समय तक वहाँ रहने के बाद उनका मथुरा से पाटलीपुत्र में पदार्पण हुआ। पाटलीपुत्र का शासन उस समय मुरुण्ड के हाथ में था। बौद्धिक बल से आर्य पादलिप्त ने नरेश मुरुण्ड को अत्यधिक प्रभावित किया।

एक बार नरेश मुरुण्ड के मस्तिष्क में भयंकर पीड़ा उठी। छह महीने तक अनेक उपचार किए गए पर किसी प्रकार की चिकित्सा वेदना को उपशांत न कर सकी। राजपरिवार में निराशा छा गई। मंत्री ने राजा को परामर्श दिया—'नाथ! आपकी वेदना का सफल उपचार आर्य पादलिप्त के मंत्र प्रयोग से संभव है।' भूप मुरुण्ड ने तत्काल आर्य पादलिप्त को बुला लाने का आदेश दिया। मंत्री आर्य पादलिप्त के पास पहुँचा और विनम्र स्वरों में बोला—'आर्य! राजा की मस्तिष्क-पीड़ा को दूर कर कीर्ति व धर्म का उपाजन करें।' मंत्री की प्रार्थना को स्वीकार कर पादलिप्त राजदरबार में गए।

प्रदेशिनी अंगुली को अपने जानु पर घुमाकर क्षण-भर में उन्होंने राजा के सिर-दर्द को उपशांत कर दिया। कला-कौशल से किसी भी व्यक्ति को अपना बनाया जा सकता है। पादलिप्त की मंत्र-विद्या से पूर्ण स्वस्थता को प्राप्त कर महाराज मुरुण्ड उनके भक्त बन गए।

एक बार आर्य पादलिप्त पृथ्वी-प्रतिष्ठानपुर में आए। उस समय राजा शातवाहन का राज्य था। आर्य पादलिप्त के पदार्पण से पूर्व शातवाहन की सभा में चार कवि आए थे। चारों कवियों ने मिलकर राजा को एक श्लोक सुनाया था—

जीर्णे भोजनमात्रेयः, कपिलः प्राणिनां दया।

बृहस्पतिरविश्वासः, पाञ्चालः स्त्रीषु मार्दवम्।

आत्रेय ऋषि ने भूख लगने पर भोजन ग्रहण करने की बात कही है। कपिल ने प्राणियों पर दया भाव रखने का आदेश दिया है। बृहस्पति ने स्त्रियों पर विश्वास न रखने का परामर्श दिया है एवं पाञ्चाल ने महिलाओं के साथ मृदु व्यवहार करने की शिक्षा दी है।

प्रस्तुत पद्य को सुनकर शातवाहन की सभा के सभी सदस्यों ने चारों कवियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की। भोगवती नामक गणिका सर्वथा मौन थी। उसने प्रशंसा में एक शब्द भी नहीं बोला। राजा ने गणिका से कहा—'तुम भी अपने विचार प्रकट करो।' तब भोगवती बोली—'गगनविद्या से संपन्न विद्या-सिद्ध विद्वान् पादलिप्त के सिवाय मैं किसी अन्य विद्वान् की स्तुति नहीं करती। आज उनके तुल्य संसार में कोई अन्य विद्वान् नहीं है।

धरती पर सभी प्रकार के मनुष्य होते हैं। वहाँ आर्य पादलिप्त के गुणों से ईर्ष्या रखने वाला शंकर नामक व्यक्ति उपस्थित था। उसने कहा—'आर्य पादलिप्त मृत को भी पुनर्जीवित कर सकते हैं?' प्रत्युत्तर में गणिका ने दृढ़ स्वर से कहा—'ऐसा भी संभव है।' भोगवती गणिका के द्वारा आर्य पादलिप्त की प्रशंसा सुनकर नरेश शातवाहन में उनसे मिलने की उत्सुकता बढ़ गई।

(क्रमशः)



मेधावी सम्मान एवं तेरापंथ प्रोफेशनल सम्मान समारोह

उत्तर-कर्नाटक।

टीपीएफ द्वारा उत्तर कर्नाटक द्वारा मेधावी छात्र सम्मान समारोह, तेरापंथ प्रोफेशनल सम्मान समारोह, जीव-अजीव एवं तेरापंथ प्रबोध प्रतियोगिता विजेताओं का सम्मान समारोह आयोजित किया गया।

शासनश्री साध्वी पद्मावती जी के सान्निध्य में कार्यक्रम आयोजित किया गया। साध्वीवृंद द्वारा नवकार मंत्र से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। अतिथियों को मंचासीन के लिए मीना नाहर ने आग्रह किया। गदग कन्या मंडल द्वारा सभी अतिथियों का परिचय दिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ० दिनेश धोका (टीपीएफ अध्यक्ष, साउथ जोन) रहे। विशेष अतिथि विक्रम कोठारी (टीपीएफ उपाध्यक्ष, साउथ जोन) और गरिमामयी उपस्थिति जयंतीलाल चोपड़ा (अध्यक्ष तेरापंथ सेवा समिति, उत्तर कर्नाटक), कांतिलाल भंसाली (अध्यक्ष कर्नाटक अंगोर निगम बोर्ड), अमृतलाल कोठारी (अध्यक्ष तेरापंथ सभा, गदग) रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता, अतिथियों एवं सभी आगंतुकों का स्वागत करते हुए अध्यक्ष अनिल नाहर ने टीपीएफ के आयामों की जानकारी दी।

मुख्य अतिथि डॉ० दिनेश धोका ने मेधावी छात्रा के लिए कैरियर काउंसलिंग सुंदर और नए ऑपॉर्च्युनिटीज के बारे में बताया। सभी छात्रों को मोटिवेट करते हुए ग्रोथ एंड सक्सेस के बारे में समझाया।

विक्रम कोठारी ने प्रोफेशनल प्रस्तुतीकरण की असीम शक्ति को बताते हुए कहा कि इससे मन की कोमल भावनाओं को व्यक्त करके दिल से दिल जोड़े भी जा सकते हैं और इसके गलत उपयोग से विश्वयुद्ध की स्थिति भी उत्पन्न की जा सकती है।

शासनश्री पद्मावती जी ने कहा हमारा जीवन स्वभाव व्यक्तित्व

चारित्र और कुल का परिचायक है नई पीढ़ी को बेहतर बनाने के कई मार्गदर्शन प्रोत्साहन की आवश्यकता है। डॉ० साध्वी गवेषणाश्री जी ने कहा कि फूल के साथ कौटा, मेघ के साथ आँधी, प्रकाश के साथ कज्जल, ज्ञान के साथ अहंकार होता है, वैसे ही विकास के साथ प्रतिभा का उद्भव होता है। पर प्रतिभा के साथ हमारा आई०क्यू० पॉवर भी हो तो कैरियर में चार चाँद लग जाते हैं।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि कैरियर को पॉवरफुल बनाने और लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पाँच सीख को अपनाने की अपेक्षा है—Coap, Challenge, Control, Co-operate, Concentrate।

साध्वीश्री दक्षप्रभा व साध्वी मेरुप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका की प्रस्तुति दी। अतिथि गदग अध्यक्ष अमितलाल कोठारी ने गदग की ओर से सभी का स्वागत किया। अध्यक्ष जयंतीलाल चोपड़ा ने शुभकामनाएँ दी। इस कार्यक्रम के प्रायोजक परिवार की ओर से शांताबाई एवं मीना नाहर को गदग महिला मंडल अध्यक्ष द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम के प्रायोजक सोहनराज अनिल नाहर (सिंधनूर-खैरवा) निवासी थे। कार्यक्रम के संयोजिका टीपीएफ उत्तर कर्नाटक की सहमंत्री-२ तृप्ति कोठारी रही। कार्यक्रम का संचालन तृप्ति कोठारी, मीना नाहर ने किया। सभी उत्तर कर्नाटक मेधावी छात्रों को gold, silver एवं bronze medal with certificate से सम्मानित किया गया। जीव-अजीव एवं तेरापंथ प्रबोध विजेताओं का सम्मान गिफ्ट एवं सर्टिफिकेट से किया गया। आभार ज्ञापन विनोद वेद मूथा ने किया।

एकाहिनक तुलसी-शतकम्

मुनि सिद्धकुमार

मंगलाचरण

(१) नमो नमो पारगतेश्वराय, श्रीवर्धमानाय नमो नमो मे।
चिन्मात्रसिद्धाय नमो नमो मे, श्रीवीतरागाय नमो नमो मे॥

— उपजाति

भवभ्रमण को अतीत कर चुके तीर्थंकर, प्रभु वर्धमान, शुद्ध चैतन्य स्वरूप सिद्ध एवं वीतराग प्रभु को मेरा बार-बार नमन।

(२) आचार्यदेवाय नमो नमो मे, सुधर्मणेऽप्यस्तु नमो नमो मे।
श्रीपाठकायायि नमो नमो मे, सुसाधुपूज्याय नमो नमो मे॥

— उपजाति

आचार्यदेव, गणधर सुधर्मा, पूज्य उपाध्याय तथा सुसाधुओं को मेरा पुनः पुनः नमस्कार।

(३) श्री भिक्षुनाथाय नमो नमो मे, श्रीभारमल्लाय नमो नमो मे।
श्रीरायचन्द्राय नमो नमो मे, श्रीमज्जयायायि नमो नमो मे॥

— इंद्रवज्रा

आचार्य भिक्षु, आचार्य भारमल, आचार्य रायचंद्र एवं जयाचार्य को मेरा अभिवंदन।

(४) नमो नमो मे मघवेश्वराय, श्रीमाणकायायि नमो नमो मे।
श्रीडालचंद्राय नमो नमो मे, श्रीकालुरामाय नमो नमो मे॥

— उपजाति

आचार्य मघराज, आचार्य माणक, आचार्य डालचंद्र तथा आचार्य कालुराम को मैं प्रणमन करता हूँ।

(५) नायकं मम काव्यस्य, यस्याद्य जन्मवासरः।
अनुध्यायामि नित्यं तं, श्रीतुलसीं नमाम्यहम्॥

— अनुष्टुप्

मेरे काव्य के मूल नायक, गुरुदेवश्री तुलसीगणी, जिनका आज जन्मदिवस है, उनका मैं नित्य स्मरण करता हूँ, नमन करता हूँ।

(६) गणाधीशपदाधीशं, दिव्यध्यानस्य धारकम्।
महाप्रज्ञं महाप्रज्ञं, संस्तुवेऽहं प्रमोदतः॥

गण और उस पद के स्वामी, दिव्य ध्यान के धारक, महाप्रज्ञ महाप्रज्ञ की मैं प्रमुदित मन से स्तुति करता हूँ।

काव्य-प्रवेश

(७) आह्वयामि महाप्रज्ञं, काव्ये सहायतां कुरु।
भवद्कृपां विनैतच्च, महदकार्यमसंभवम्॥

मैं आचार्यश्री महाप्रज्ञ का आह्वान करता हूँ, कि वे मेरे इस काव्य में सहायता करें, क्योंकि आपके कृपा के बिना यह महदकार्य असंभव प्रतीत होता है।

(८) प्रसह्य श्वानपुच्छं तु, कदाचित् सरलं भवेत्।
भवद्सर्वगुणानां च, ह्युल्लेखनमसंभवम्॥

कदाचित् कुत्ते की पूँछ को बलपूर्वक सीधा किया जा सकता है, परंतु आपके सभी गुणों का वर्णन असंभव है।

(९) कदाचित् खनितुं शक्या, गृहाधारशिला नमे।
भवद्सर्वगुणानां तु, ह्युल्लेखनमसंभवम्॥

कदाचित् घर की नींव आकाश में खोदी जा सकती है, परंतु आपके सभी गुणों का वर्णन असंभव है।

(१०) कदापि वानरं कर्तुं, शक्नोति किन्तु साधकः।
भवद्सर्वगुणानां च, ह्युल्लेखनमसंभवम्॥

कभी बंदर को साधक बनाया जा सकता है, परंतु आपके सभी गुणों का वर्णन असंभव है।

(११) निभालयितुमादर्शं, शक्योऽन्ध आत्मलक्षणम्।
भवद्सर्वगुणानां तु, ह्युल्लेखनमसंभवम्॥

कदाचित् प्रज्ञाचक्षु दर्पण में अपना रूप निहार सकता है, परंतु आपके सभी गुणों का वर्णन असंभव है।

(१२) पानीयं ज्वलितुं शक्यं, वै धग्द-धग्ता कदा।
भवद्सर्वगुणानां तु, ह्युल्लेखनमसंभवम्॥

कभी पानी धग्-धग्पूर्वक जल सकता है, परंतु आपके सभी गुणों का वर्णन असंभव है।

(१३) कृशानुः शीतलीभूत्वा, शक्योऽग्निं शमितुं कदा।
भवद्सर्वगुणानां तु, ह्युल्लेखनमसंभवम्॥

कभी स्वयं आग शीतलता धारण करके आग बुझा सकती है, परंतु आपके सभी गुणों का वर्णन असंभव है।

(शेष अगले अंक में)

अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह का आयोजन

बैंगलुरु।

अणुविभा के तत्त्वावधान में अणुव्रत उद्बोधन सप्ताह कार्यक्रम अणुव्रत समिति, बैंगलुरु द्वारा आयोजित किया गया। सांप्रदायिक सौहार्द दिवस के रूप में उद्बोधन सप्ताह का प्रारंभ तेरापंथ भवन, गांधीनगर में साध्वी लावण्यश्री जी के सान्निध्य में हुआ। अणुव्रत समिति अध्यक्ष शांतिलाल पोरवाल ने स्वागत वक्तव्य दिया। गांधीनगर सभा अध्यक्ष सुरेश दक की अध्यक्षता प्राप्त हुई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जंगम्मा क्षेत्र के मठाधी श्री चिद्धगण स्वामी जी व मुख्य वक्ता भारती सिंह ने अपने विचार व्यक्त किए। सभी का आभार समिति मंत्री माणकचंद्र संचेती ने माना।

द्वितीय दिवस का कार्यक्रम जीवन-विज्ञान दिवस के रूप में नंदिनी लेआउट स्थित आचार्य महाप्रज्ञ हाईस्कूल में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता दे रहे तेरापंथ सभा, गांधीनगर के पूर्व अध्यक्ष मनोहर भारती, मुख्य अतिथि विधायक व पूर्व शिक्षा मंत्री सुरेश कुमार व मुख्य वक्ता जीवन-विज्ञान के संयोजक ललित आच्छा ने अपना वक्तव्य दिया।

तृतीय दिवस अणुव्रत प्रेरणा दिवस के रूप में तेरापंथ भवन में विजयनगर के प्रांगण में साध्वी प्रमिलाश्री जी के सान्निध्य में आयोजित हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रदाता तेरापंथ सभा, विजयनगर के अध्यक्ष राजेश चावत व मुख्य वक्ता अणुविभा के दक्षिण संगठन मंत्री कन्हैयालाल चिप्पड़ ने अपने विचार व्यक्त किए।

उद्बोधन सप्ताह का चौथा दिवस पर्यावरण दिवस के रूप में चामराजपेट स्थित जनता स्कूल में आयोजित हुआ। सान्निध्य प्रदाता जंगम्मा क्षेत्र के मठाधी श्रीचिद्धगण स्वामी जी, मुख्य अतिथि पूर्व पार्ष कविता जैन व मुख्य वक्ता चंद्रशेखरय्या ने अपनी भावनाएँ प्रेषित की। कार्यक्रम का संचालन मंत्री प्रवीण बोहरा ने किया व सभी के प्रति आभार संगठन मंत्री निर्मल पोखरना ने माना। पाँचवाँ दिवस नशामुक्ति दिवस के रूप में शंकरपुरम स्थित सी०बी० भंडारी जैन कॉलेज में आयोजित किया गया। अध्यक्षता दे रहे कॉलेज के अध्यक्ष नागराज व मुख्य वक्ता टीपीएस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष संजय धारीवाल ने अपने विचार रखे।

अनुशासन दिवस के रूप में पाँचवाँ दिवस जयनगर स्थित श्री श्वेतांबर स्थानकवासी जैन ट्रस्ट स्थानक में उपप्रवर्तीनी आगम भारती

वीरांगना श्री रिद्धिमाजी मा०सा० के सान्निध्य में आयोजित हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता दे रहे दीपचंद्र भंसाली, मुख्य अतिथि शौ गौतम धारीवाल व मुख्य वक्ता तेयुप बैंगलुरु के अध्यक्ष विनय बैद ने अनुशासन पर अपने विचार व्यक्त किए। उद्बोधन सप्ताह का समापन दिवस राजराजेश्वरी नगर तेरापंथ सभा भवन में शासनश्री साध्वी कंचनप्रभा जी के सान्निध्य में अहिंसा दिवस के रूप में संपन्न हुआ। सभी का स्वागत उपाध्यक्ष देवराज रायसोनी ने किया। अध्यक्षता प्रदाता राजराजेश्वरी नगर सभा अध्यक्ष मनोज डागा, मुख्य अतिथि संस्था शिरोमणि तेरापंथ महासभा के सहमंत्री प्रकाश लोढ़ा व अभातेममं के पूर्व महामंत्री वीणा बैद ने अहिंसा की विशेषता पर अपने विचार व्यक्त किए। सभी का आभार संगठन मंत्री हरकचंद्र ओस्तवाल ने माना व कार्यक्रम का संचालन संयोजक ललित बाबेल ने किया।

समिति अध्यक्ष शांतिलाल पोरवाल ने सफल कार्यक्रम हेतु सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। मंत्री माणकचंद्र संचेती ने सभी से अणुव्रत से जुड़ने का निवेदन किया। सहमंत्री प्रवीण बोहरा, संगठन मंत्री निर्मल पोखरना, उपाध्यक्ष देवराज रायसोनी, संयोजक ललित बाबेल, सह-संयोजक धर्मेन्द्र बरलोटा, कार्यकर्ता रूपचंद्र देसरला का पूरे उद्बोधन सप्ताह में विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। इंद्रचंद्र, धर्मीचंद्र, महावीर धोका परिवार का प्रायोजक के रूप में सहयोग प्राप्त हुआ।

शपथ ग्रहण समारोह

केसिंगा।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में केसिंगा तेरापंथ भवन में अणुव्रत समिति, केसिंगा सत्र-२०२१-२३ के अध्यक्ष एवं पदाधिकारियों का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया। सर्वसम्मति से मनोनीत अध्यक्ष शुभंकर जैन को उड़ीसा प्रांतीय जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा के महामंत्री अनूप कुमार जैन ने शपथ पाठ कराया। तत्पश्चात् अध्यक्ष शुभंकर जैन ने अपने पदाधिकारीगण एवं कार्यसमिति सदस्यों को शपथ ग्रहण कराया।

मुनिश्री ने अपने उद्बोधन सहित मंगलपाठ कृपा कर सभी को अणुव्रत प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी के अवदानों को जनमानस तक पहुँचाने की कामना की। इस शपथ ग्रहण समारोह में समाज के अनेकों श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित थे।

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला में 'दाम्पत्य जीवन कैसे बनें सुखी' संगोष्ठी का आयोजन

जयपुर।

अभातेयुप के तत्वावधान में तेयुप द्वारा व्यक्तित्व विकास कार्यशाला में 'दाम्पत्य जीवन कैसे बनें सुखी' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन मुनि सुमति कुमार जी एवं मुनि जयकुमार जी के सान्निध्य में महावीर साधना केंद्र, जवाहर नगर में किया गया। तेयुप के अध्यक्ष राजेश छाजेड़ ने कार्यशाला में उपस्थित आगंतुकों का स्वागत किया।

कार्यशाला का शुभारंभ मुनि सुमति कुमार जी ने नमस्कार महामंत्र का संगान करके करवाया। विजय गीत का संगान तेयुप, जयपुर के सदस्यों द्वारा किया गया। मुनिश्री ने कहा कि दाम्पत्य जीवन में

सामंजस रखकर वीतरागता की ओर बढ़ा जा सकता है। मुनि जयकुमार जी ने कहा कि परिवार में सामंजस्य धैर्य, आस्था व विश्वास के साथ रखा जा सकता है। मुनि देवार्थ कुमार जी ने अपने विचार प्रकट किए।

अभातेयुप महामंत्री मनीष दफ्तरी ने विचार व्यक्त किए। मुख्य वक्ता दिनेश बुरड़ ने बताया कि दाम्पत्य जीवन में सफलता आपसी सद्भावना भावना से एक-दूसरे को समझने के भाव रखकर, मान-सम्मान का ख्याल रखते हुए परस्पर सौहार्द से रखी जा सकती है। सोनल पिपाडा ने गीतिका का संगान किया। मुख्य अतिथि का सम्मान तेयुप, जयपुर एवं

तेरापंथ संघ जवाहरनगर के द्वारा किया गया।

मंत्री सुरेंद्र नाहटा ने बताया कि इस अवसर पर अभातेयुप से लक्की कोठारी, सुनील चंडालिया, देशर भर से पधारे हुए सरगम टीम के सदस्य, कल्याण मित्र श्रावक राजकुमार बरड़िया व पूर्व अध्यक्ष श्रेयांस पारख आदि अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्यगण उपस्थित थे। कार्यक्रम के संयोजक हर्ष छाजेड़ व गौतम बरड़िया सहित तेयुप, जयपुर के सदस्यों का उल्लेखनीय श्रम रहा। कार्यक्रम का संचालन निवर्तमान अध्यक्ष श्रेयांस बैंगानी ने किया। आभार ज्ञापन गौतम बरड़िया ने किया।

जैन साधना पद्धति में एक अनुष्ठान है - तपस्या

विल्लुपुरम।

साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी के सान्निध्य में मासखमण तपोभिनंदन आयोजित हुआ। संतोष सुराणा ने 9५ की तपस्या का प्रत्याख्यान किया था, साध्वीश्री की प्रेरणा से तपस्वी बहन का संकल्प बल और बढ़ा एवं वह इस तपपथ पर आगे बढ़ गई।

साध्वी उज्ज्वलप्रभा जी ने कहा कि तप एक ऐसा अनुष्ठान है, जिसमें मनोबल, संकल्पबल और शारीरिक बल की दृढ़ता एवं अनुकूलता अति आवश्यक है। तपस्वी बहन का साथ देने वाले उनके परिवार का भी अभिनंदन होना चाहिए।

साध्वी अनुप्रेक्षाश्री जी ने कहा कि समय पर करणीय कार्य यदि कर लिया जाए तो निश्चित ही व्यक्ति बाजी जीत लेता है। जो व्यक्ति एक बूँद की कीमत नहीं जानता वह सागर को क्या जानेगा। मनुष्य जीवन की मौलिकता जानना और समझना जरूरी है। साध्वी प्रबोधयशा जी ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति के भीतर अनंत शक्तियाँ छिपी हुई हैं। अपने भीतर की शक्तियों को जगाने की प्रेरणा मिलती है—साधु-साध्वियों से।

कार्यक्रम का संचालन नई विधा से बुलेटिन के माध्यम से संगीता सुराणा एवं

दिशा बाफना ने किया। कार्यक्रम का शुभारंभ सुशील सुराणा एवं पवन सुराणा के मंगलाचरण द्वारा हुआ। तेरापंथ सभा से महेंद्र धोखा, मोतीचंद भंडारी, महिला मंडल ने गीतिका एवं सिंपोजियम के द्वारा अपने मन की बात की प्रभावी प्रस्तुति दी। परिवार से रीटा आच्छा, केसर आच्छा, यश, मेहक, निष्ठा सुराणा तथा नरेश सुराणा ने भी अपने विचार व्यक्त किए और असाधारण साध्वीप्रमुखाश्री जी का संदेश वाचन पवन सुराणा ने किया। आभार ज्ञापन सभा के मंत्री राजेश सुराणा द्वारा किया गया।

बहुमुखी विकास में योगभूत बन रही है टीपीएफ

मदुरै।

विकास के शिखर पर आरोहण करने के लिए शिक्षा के साथ अध्यात्म का संबंध होना बहुत जरूरी है। आज के भौतिक युग में शिक्षा विकास के शिखरों को छू रही है, पर शिक्षा को जीवन के क्षेत्र में किस तरह नियोजित किया जाए, इस बात से आज की युवा पीढ़ी अनभिज्ञ है। टीपीएफ, तेरापंथ धर्मसंघ में मुख्य चार संस्थाएँ हैं जो संघ की उन्नति, प्रगति में अहर्निश लगी हुई हैं। उसमें तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम (टीपीएफ) जिसका लक्ष्य है आज की पीढ़ी को धर्म से और धर्मसंघ से जोड़ना। यह संस्था आज की युवा पीढ़ी के बहुमुखी विकास में अपना योगदान दे रही है। यह विचार तेरापंथ भवन में मुनि अर्हत कुमार जी ने टीपीएफ कार्यशाला में व्यक्त किए। बाल संत मुनि जयदीप कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया।

साउथ जोन के अध्यक्ष दिनेश धोखा ने टीपीएफ की विस्तृत जानकारी दी। इरोड सभा अध्यक्ष हीरालाल चोपड़ा ने भी अपने विचार रखे। टीपीएफ साउथ जोन अध्यक्ष दिनेश धोखा का मदुरै तेरापंथ सभा द्वारा सम्मान मंत्री धीरज दुगड़ एवं उपासक नैनमल कोठारी ने किया तथा इरोड सभा अध्यक्ष हीरालाल चोपड़ा का सम्मान तेयुप अध्यक्ष संदीप बोकड़िया एवं उपाध्यक्ष अभिनंदन बागरेचा ने किया। धन्यवाद ज्ञापन तेयुप उपाध्यक्ष अभिनंदन बागरेचा ने किया।

तेरापंथ सभा मीडिया प्रभारी जेटीएन प्रतिनिधि अशोक जीरावला ने आगंतुकों का स्वागत एवं संचालन किया। कार्यक्रम में इरोड, गुजरात, महाराष्ट्र, हैदराबाद आदि क्षेत्रों से भी काफी लोग उपस्थित थे।

सेवा कार्य

विजयनगर।

तेरापंथी सभा द्वारा सेवा कार्य के अंतर्गत केंगरी में स्थित गुरुकुल विद्या पीठ आश्रम में लगभग 900 अनाथ बच्चों को अल्पाहार करवाया। इस अवसर पर आचार्यश्री महाश्रमण जी द्वारा लिखित कन्नड़ में अनुवादित तीन पुस्तक आश्रम में भेंट की। सभा अध्यक्ष राजेश चावत ने सभी को मंगलकामना प्रेषित की एवं वहाँ के सभी टीचर एवं कर्मचारियों की विशेष रूप से सराहना की।

इस अवसर पर सभा उपाध्यक्ष एवं प्रायोजक परिवार से सुभाष पोखरणा, महेंद्र टेबा, मंत्री मंगल कोचर, प्रकाश गांधी, संतोष मालू सेवा कार्य संयोजक कैलाश गांधी, कार्यकारिणी सदस्य प्रकाश कोचर एवं लिलि हेल्पिंग हैंड टीम के सभी सदस्य उपस्थित थे।

तेरापंथ टास्क फोर्स

दिल्ली।

अभातेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद, दिल्ली द्वारा तेरापंथ टास्क फोर्स (टीटीएफ) लेवल-9 का आयोजन किया गया। इस दो दिवसीय कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ भवन, छतरपुर, महारौली में हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत जैन संस्कार विधि से संस्कारक सुशील डागा, जतन श्यामसुखा, विकास सुराणा, संजय संचेती एवं तेयुप मंत्री सौरभ आंचलिया द्वारा विधिवत रूप से करवाई गई। इसके पश्चात मंगलाचरण व टीटीएफ गीत के संगान से कार्यक्रम शुरू हुआ।

कार्यक्रम के पहले दिन तेरापंथी सभा, दिल्ली के अध्यक्ष जोधराज बैद, दिल्ली सभा के महामंत्री डालमचंद बैद, महिला मंडल की अध्यक्ष मंजु जैन, महिला मंडल की निवर्तमान अध्यक्ष निर्मला कोठारी, टीटीएफ के राष्ट्रीय सह-प्रभारी जितेश पोखरना, तेयुप दिल्ली के परामर्शक संदीप डूंगरवाल एवं काफी संख्या में तेयुप सदस्यों की उपस्थिति ने कार्यक्रम की गरिमा बढ़ाई।

तेयुप के अध्यक्ष विकास बोथरा ने वहाँ उपस्थित सभी अतिथियों, एनडीआरएफ की टीम और सभी प्रतिभागी कैडेट्स का स्वागत व अभिनंदन करते हुए एनडीआरएफ की टीम और उप-सेनानायक आदित्य प्रताप सिंह को ट्रेनिंग के लिए स्वीकृति प्रदान करने हेतु आभार व्यक्त किया।

जोधराज बैद ने कार्यक्रम को मानव सेवा, राष्ट्र सेवा और समाज सेवा के लिए अत्यंत उपयोगी बताते हुए इस तरह के कार्यक्रमों को सभी क्षेत्रों में करवाने हेतु जोर दिया। डालमचंद बैद ने भी सभी कैडेट्स को आशीर्वाचन प्रदान किया। एनडीआरएफ की टीम से उप-सेनानायक आदित्य प्रताप सिंह ने सत्र की शुरुआत की।

कार्यक्रम के दूसरे दिन अभातेयुप के राष्ट्रीय महामंत्री मनीष दफ्तरी ने भावी पीढ़ी के लिए इस कार्यक्रम की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। अणुव्रत न्यास के पूर्व प्रबंध न्यासी संपत नाहटा ने अपने वक्तव्य से युवकों में ऊर्जा का संचार किया। टीटीएफ के राष्ट्रीय सह-प्रभारी जितेश पोखरना ने दोनों दिन कैडेट्स के साथ कंधे-से-कंधा मिलाकर उनका प्रोत्साहन किया और कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। समाज की कई संस्थाओं के पदाधिकारियों और गणमान्य व्यक्तियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करवाई व कार्यक्रम की प्रशंसा की।

दो दिवसीय सत्र के दौरान २४ कैडेट्स ने अपनी सहभागिता दर्ज करवाई, जिसमें उन्होंने सड़क दुर्घटना, भूकंप, आग लगने व कई प्रकार की अन्य विकट परिस्थितियों में उपचार और बचाव का प्रशिक्षण प्राप्त किया। टीटीएफ गीत के संगान के साथ कार्यक्रम के समापन की घोषणा की गई। इस कार्यक्रम के प्रायोजक जोधराज बैद एवं अशोक सुरेंद्र डागा रहे। कार्यक्रम के लिए नगराज दुगड़ का भी अर्थ-सहयोग प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संयोजन पवन नाहर एवं आभार ज्ञापन कार्यक्रम संयोजक मनीष जैन ने किया।

बिटिया रानी बड़ी सयानी

गंगाशहर।

तेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल का सार्थक अभियान 'बिटिया रानी बड़ी सयानी' का आगाज महावीर चौक, गंगाशहर में किया गया। किशोर मंडल संयोजक कुलदीप छाजेड़ ने कहा कि सर्वप्रथम बैनर का विमोचन भाजपा महिला मोर्चा जिला अध्यक्ष सुमन छाजेड़, जैन महासभा अध्यक्ष जैन लूणकरण छाजेड़, सभा अध्यक्ष अमरचंद सोनी और तेयुप अध्यक्ष विजेंद्र छाजेड़ द्वारा किया गया।

इस अभियान के तहत बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान की राजस्थान प्रमुख ब्रांड एंबेसडर मीना आसोपा ने सभी को संकल्प दिलवाए साथ ही एक सुझाव फॉर्म सभी को वितरित किया गया, जिसमें सभी ने अपने विचार व्यक्त किए। सुमन छाजेड़, भव्य संचेती, जैन लूणकरण छाजेड़, गंगाशहर थानाधिकारी राणीदान, संजू लालाणी व आकांक्षा ने अपनी-अपनी अभिव्यक्ति की प्रस्तुति दी।

किशोर मंडल सह-संयोजक दीपेश बैद ने कहा कि इस अवसर पर अभातेयुप साथी पीयूष लुणिया व पवन छाजेड़, पुरानी लाइन ओसवाल पंचायती अध्यक्ष बच्छराज नाहटा, बजरंग बोथरा, ललित राखेचा, देवेन्द्र डागा, भरत गोलछा, चंचल चोपड़ा, धनपत भंसाली की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन गुनीत आंचलिया द्वारा किया गया।



दो दिवसीय जेटीएन प्रतिनिधि सम्मेलन 'मंथन'

केलवा।

अभातेयुप के तत्वावधान में तेयुप की आयोजना में अभातेयुप जैन तेरापंथ न्यूज का पंचम दो दिवसीय प्रतिनिधि सम्मेलन 'मंथन' आयोजित किया गया। अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष व प्रधान संपादक संदीप कोठारी द्वारा विधिवत घोषणा से प्रतिनिधि सम्मेलन प्रारंभ हुआ। संदीप कोठारी ने अपने वक्तव्य में कहा कि जेटीएन एक ऐसा उपक्रम है जिससे सैकड़ों प्रतिनिधि जुड़े हुए हैं और वे लाखों लोगों तक संघीय समाचारों को पहुँचाते हैं। हम सभी परिवर्तन के साथ अपनी पहचान बनाएँ। हम इस सम्मेलन में मंथन के साथ नवीन नवनीत को प्राप्त करें। नई तकनीक में हमें सीमित संसाधनों के साथ आगे बढ़ना है। डिजिटल समाचार द्वारा हम अपनी बात जन-जन तक पहुँचा रहे हैं। जेटीएन का न्यूज पोर्टल भी जल्द से जल्द गुरु चरणों में लोकार्पित होगा, जिसके माध्यम से पाठक कभी भी, कहीं भी, कोई भी न्यूज को देख सकेंगे।

महामंत्री मनीष दफ्तरी ने कहा कि तेरापंथ टाइम्स का न्यूज पोर्टल आ चुका है। इसी कड़ी में हम जेटीएन का भी न्यूज पोर्टल ला रहे हैं। अपनी खबरों को सुरक्षित रखने का एकमात्र उपाय है—न्यूज पोर्टल से जुड़ना और लागू करना।

इससे पूर्व जैन संस्कार विधि से राष्ट्रीय अध्यक्ष, प्रधान संपादक अभातेयुप ने जेटीएन एवं अतिथियों का स्वागत किया गया। केलवा महिला मंडल

ने सभी का तिलक एवं तेयुप, केलवा सदस्यों ने अंगवस्त्रम से अभिनंदन किया। अतिथियों ने जैन ध्वजारोहण किया।

जेटीएन के निवर्तमान कार्यकारी संपादक धर्मेन्द्र डाकलिया ने नमस्कार महामंत्र के सम्पुष्कारण से मंगलाचरण किया। अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष के साथ सभी ने श्रावक निष्ठा पत्र के संकल्पों का स्वीकरण किया। कार्यकारी संपादक मुकेश भटेवरा ने जेटीएन की गतिविधि बताई। सह-संपादक नवरत्न ओस्तवाल ने जेटीएन की अभी तक की यात्रा को पावर पॉइंट प्रजेंटेशन के माध्यम से जानकारी दी। तेयुप केलवा अध्यक्ष मुकेश कोठारी, तेरापंथ सभा अध्यक्ष महेंद्र कोठारी, केंद्रीय संयोजक देव चावत ने अपने-अपने वक्तव्य से स्वागत भाषण और मंत्री सुमित सांखला ने धन्यवाद ज्ञापन किया। तेयुप ने विजय गीत एवं जेटीएन, भीलवाड़ा प्रतिनिधियों ने स्वागत गीत का संगान किया। इस पंचम अधिवेशन में सहयोगी परिवारों, जितेश पोखरना, महेंद्र कोठारी, अपेक्स का तेयुप केलवा द्वारा स्मृति चिह्न से सम्मान किया। प्रतिनिधि सम्मेलन का थीम सॉन्ग जेटीएन महिला प्रतिनिधियों द्वारा प्रस्तुत किया। इस सम्मेलन के लिए राजस्थान विधानसभाध्यक्ष सी०पी० जोशी द्वारा शुभकामना संप्रेषित की गई। तेयुप परिवार द्वारा अभातेयुप पदाधिकारियों, सदस्यों, अतिथियों का स्मृति चिह्न से सम्मान किया। प्रथम सत्र का दिनेश कोठारी एवं

करुणा कोठारी ने संयुक्त रूप से संचालन किया।

द्वितीय सत्र में राजस्थान पत्रिका के पूर्व संपादक राजेंद्र कसैरा ने न्यूज रिपोर्ट बनाने की नई तकनीक व बारीकियाँ बताई। एंकर, रिपोर्टर, पत्रिका, टीवी ज्योति समदड़िया ने वीडियो रिकॉर्डिंग में कैसे, कब और क्या बोलना चाहिए विषय पर प्रासंगिक प्रस्तुति दी। जयंत सेठिया ने वीडियो एडिटिंग के बारे में बताया। अभातेयुप पूर्व अध्यक्ष बी०सी० भलावत, अभातेयुप के निवर्तमान अध्यक्ष विमल कटारिया ने विचार व्यक्त किए। मंगलाचरण सरोज सिंघवी एवं मोनिका चोरड़िया ने किया। इस पंचम प्रतिनिधि सम्मेलन में अभातेयुप के राष्ट्रीय अध्यक्ष, प्रधान संपादक संदीप कोठारी ने अभातेयुप जेटीएन लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड से महावीर सेमलानी और अभातेयुप जेटीएन अचीवमेंट अवार्ड-२०२१ के लिए संजय वैद मेहता को सम्मानित किया। सत्र का संचालन साधना चोरड़िया ने किया।

तृतीय सत्र भक्ति संध्या 'केलवा के योगी, लो प्रणाम मेरा' कार्यक्रम रखा गया। जिसमें झील कोठारी, जागृत कोठारी, विमला चपलोट, रेखा कोठारी, धर्मेन्द्र डाकलिया, विमल गादिया इत्यादि व्यक्तियों ने सुमधुर स्वर लहरियों के साथ प्रस्तुति दी। सभी प्रतिनिधियों को अभातेयुप परिवार एवं तेयुप केलवा की ओर से स्मृति चिह्न प्रदान किए गए।

मासखमण तप अभिनंदन

दिल्ली।

दिल्ली शाहदरा प्रवासी रूपचंद सेठिया के सुपुत्र हनुमानमल सेठिया के ३७ की तपस्या का तप संपूर्ति अनुष्ठान जैन संस्कार विधि द्वारा पारिवारिकजन की उपस्थिति में संस्कारक एवं उपासक राजकुमार जैन, कमल सेठिया, पवन गीड़िया व संजय संचेती ने मंत्रोच्चार से संपादित करवाया।

कार्यक्रम की शुरुआत नवकार महामंत्र से हुई। तत्पश्चात परमेष्ठी वंदना का सामुहिक संगान किया गया। संस्कारक व उपासक राजकुमार जैन ने हनुमानमल सेठिया के ३७ के तप की अनुमोदना की। संस्कारक कमल सेठिया ने मंगलभावना यंत्र की महत्वपूर्ण जानकारी से सभी को अवगत कराया। संस्कारक पवन गीड़िया ने सेठिया परिवार एवं उपस्थित सभी पारिवारिक जन से उपहार स्वरूप त्याग-प्रत्याख्यान करवाए। संस्कारक संजय संचेती ने हनुमानमल सेठिया के ३७ के तप की अनुमोदना करते हुए तेयुप, दिल्ली की तरफ से सेठिया परिवार व पधारें हुए सभी मेहमानों का आभार ज्ञापित किया। तेयुप, दिल्ली की तरफ से सेठिया परिवार को मंगलभावना यंत्र भेंट किया गया।

स्वच्छता अभियान

साउथ हावड़ा।

तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा महात्मा गांधी जयंती के अवसर पर स्वच्छता अभियान का आयोजन अपने क्षेत्र साउथ हावड़ा के महाप्रज्ञ संध्या बाजार फॉरशोर रोड में किया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के संगान के साथ हुआ। कार्यकारिणी अध्यक्ष मनीष कुमार बैद ने उपस्थिति सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम का संयोजन किशोर मंडल पर्यवेक्षक एवं सहमंत्री-द्वितीय राहुल दुगड़ की देख-रेख में हुआ।

कार्यक्रम का संचालन प्रभारी भानुप्रताप चोरड़िया, संयोजक संजोग पारख, साहिल नाहर, प्रवीण कोठारी ने किया। उपाध्यक्ष-द्वितीय ज्ञानमल लोढ़ा, मंत्री गगन दीप बैद, सहमंत्री-प्रथम अमित बेगवानी एवं अनेक पदाधिकारीगण तथा सदस्यों की उपस्थिति रही। आभार ज्ञापन प्रभारी भानुप्रताप चोरड़िया ने किया।

मासखमण

तप अभिनंदन

बीकानेर।

शांति निकेतन, तेरापंथ सेवा केंद्र में तेरापंथी सभा द्वारा मासखमण तप करने वाली तपस्विनी बहन पुष्पा देवी सुराणा का तप अभिनंदन कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी पावनप्रभा जी ने कहा कि बहन पुष्पा सुराणा ने मासखमण तप करके अपने आत्मकल्याण के साथ-साथ जिन शासन की प्रभावना बढ़ाई है। तपस्या का मूल उद्देश्य कर्म निर्जरा करना है।

कार्यक्रम का संचालन संजू लालाणी ने किया। तेयुप के पूर्व अध्यक्ष व अभातेयुप कार्यकारिणी सदस्य पवन छाजेड़, तेरापंथ महिला मंडल की मंत्री कविता चोपड़ा व तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमरचंद सोनी ने तपस्या की अनुमोदना करते हुए तपस्विनी का अभिनंदन किया। तपस्विनी पुष्पा देवी सुराणा का महिला मंडल मंत्री कविता चोपड़ा, रेणु बाफना, संजू लालाणी ने पताका व माल्यार्पण करके तथा तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमर चंद सोनी, सहमंत्री पवन छाजेड़, जनलाल दुगड़ व जीवराज सामसुखा ने साहित्य व अभिनंदन पत्र भेंट कर सम्मानित किया।

रक्तदान शिविर

पूर्वांचल-कोलकाता।

अभातेयुप के निर्देशन में तेयुप द्वारा आयोजित इस सत्र के तृतीय रक्तदान शिविर अस्तित्व कॉम्प्लेक्स में किया गया। जिसमें कुल ४० यूनिट रक्त का दान युवक शक्ति ने किया।

निवर्तमान अध्यक्ष आलोक बरमेचा, एमबीडीडी के राज्य प्रभारी एवं अभातेयुप साथी यश रामपुरिया, अध्यक्ष विकास सिंधी, उपाध्यक्ष-प्रथम एवं एमबीडीडी के प्रभारी अमित बैद, मंत्री धीरज मालू, सहमंत्री राजीव खटेड़, कार्यसमिति सदस्य व एमबीडीडी के संयोजक रवि दुगड़, विवेक सुराणा, प्रभात चंडालिया आदि अनेक पदाधिकारी एवं सदस्यगण ने मिलकर शिविर में अपनी सेवाएँ दीं।

शिविर की आयोजना में विशेष सहयोग मिला—अस्तित्व अपार्टमेंट ओनर्स एसोसिएशन से जिसमें प्रमोद छाजेड़, रितेश नाहर, हेमंत सुराणा एवं रवि जैन का। परिषद ने सभी के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया। रक्तदान शिविर में विशेष श्रम दिया परिषद की उपाध्यक्ष-प्रथम व एमबीडीडी प्रभारी अमित बैद एवं सभी एमबीडीडी संयोजक ने। शिविर के प्रायोजक पवन बैद को साधुवाद दिया।

सात्विक भोजन

स्वस्थ जीवन

गंगाशहर।

तेयुप के तत्वावधान में तेरापंथ किशोर मंडल की प्रस्तुति सात्विक भोजन स्वस्थ जीवन कार्यक्रम का आयोजन साध्वी पावनप्रभा जी के सान्निध्य में शांति निकेतन के प्रांगण में किया गया। किशोर मंडल सह-संयोजक दीपेश बैद ने बता कि नेशनल कुकिंग डे पर आयोजित कार्यक्रम में बोलते हुए साध्वी अक्षयप्रभा जी ने मंत्र दिया कि जीभ सुधरेगी तभी जीवन सुधरेगा। शांति निकेतन व्यवस्थापिका साध्वी पावनप्रभा जी ने कहा कि मौसम के अनुसार भोजन होना चाहिए, प्रतिपक्षी पदार्थों को अलग-अलग खाना चाहिए। इस अवसर पर किशोर मंडल ने एक दिवसीय जमीकंद खाने का त्याग, रात्रि भोजन करने का त्याग, 99 द्रव्य की सीमा, 9५ दिवसीय फास्ट फूड खाने का त्याग किया।

कार्यक्रम में कुलदीप छाजेड़ ने अपनी प्रस्तुति दी। मुदित ललवाणी ने सभी का आभार ज्ञापन किया। सभा अध्यक्ष अमरचंद सोनी, अभातेयुप कार्यसमिति सदस्य पीयूष लुगिया, तेयुप अध्यक्ष विजेंद्र छाजेड़, मंत्री देवेंद्र डागा, महिला मंडल मंत्री कविता चोपड़ा, कन्या मंडल संयोजिका योगिता भूरा, सह-संयोजिका लेखा मालू की गरिमामय उपस्थिति रही। किशोर मंडल के पवन रांका, विनोद जैन, रौनक बोथरा, रौनक चोरड़िया, जिनेश पुगलिया, अरिहंत गीड़िया, मुदित ललवाणी, सौरभ गीड़िया ने सारी व्यवस्थाओं को अंतिम रूप दिया।

आचार्य भिक्षु चरमोत्सव

साउथ-कोलकाता।

अभातेयुप के निर्देशानुसार तेयुप द्वारा तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य प्रवर्तक भिक्षु स्वामी की भादुड़ी तेरस के उपलक्ष्य में भिक्षु धम्म जागरण का आयोजन तेरापंथ भवन में हुआ। कार्यक्रम में साउथ-कोलकाता, तेरापंथी सभा, महिला मंडल और टीपीएफ ने अपनी अहम भूमिका निभाई। कार्यक्रम का संचालन संदीप सेठिया ने किया। तेयुप के अध्यक्ष अमित पुगलिया ने सभी गणमान्य पदाधिकारियों एवं अतिथियों का स्वागत किया।

इस आयोजन के प्रायोजक समाज भूषण कल्याण मित्र गोयल परिवार से अभिषेक गोयल का सम्मान तेयुप के अध्यक्ष एवं मंत्री ने किया। कार्यक्रम में नीता सिंघवी, संगीता कुचेरिया, विजया दुगड़, सुलोचना नाहटा, सपना बैंगानी, धरमचंद धाड़ेवा, अलोक चोपड़ा, राजेश गोष्ठी, प्रवीण सिर्रोहिया, विनीत बांठिया, राकेश नाहटा, रोहित दुगड़, हर्ष दुगड़, मास्टर अरिहंत सिर्रोहिया एवं गर्चा गोष्ठी, महिला मंडल की बहनों ने अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

अनुत्तर गुणों के धनी होते हैं केवली : आचार्यश्री महाश्रमण



भीलवाड़ा, ११ अक्टूबर, २०२१

तेजस्विता के धनी आचार्यश्री महाश्रमण जी ने अमृत देशणा प्रदान करते हुए फरमाया कि ठाण आगम में शास्त्रकार ने बताया है कि दस अनुत्तर चीजें केवली के होती हैं। जो केवलज्ञान को प्राप्त कर लेता है, उसके अनुत्तरता आ जाती है। अनुत्तरता अर्थात् जिससे अधिक वह चीज किसी में नहीं होती है।

शुद्धि की दृष्टि से सिद्धों के आगे फिर कोई नहीं। अकर्म अवस्था की दृष्टि से सिद्ध अनुत्तर है। केवलज्ञानी के पास दस अनुत्तर चीजें होती हैं। पहली बात है—अनुत्तर ज्ञान। केवलज्ञानी से ज्यादा ज्ञान किसी के भी पास नहीं होता। मनुष्य केवलज्ञानी से ज्यादा ज्ञान सिद्धों के पास भी नहीं होता। ज्ञानावरणीय कर्म उनका पूर्णतया क्षीण हो जाता है, तब उन्हें अनुत्तर-केवलज्ञान प्राप्त हो जाता है।

दूसरा अनुत्तर है—अनुत्तर दर्शन। दर्शनावरणीय कर्म पूर्णतया क्षीण हो जाता है, तो वैसा होने से उन्हें संपूर्ण दर्शन-केवल दर्शन केवली को प्राप्त हो जाता है। केवली से ज्यादा दर्शन सिद्धों में भी नहीं होता। तीसरा है—अनुत्तर चरित्र। केवलज्ञानी के पास क्षायिक चरित्र होता है। उनमें

यथाख्यात चरित्र होता है।

पाँच चरित्र है—सामायिक, छेदोपस्थापनीय, परिहार-विशुद्धि, सूक्ष्म-संपराय और यथाख्यात चरित्र। इन पाँचों में अनुत्तर चरित्र यथाख्यात चरित्र है। यथाख्यात में भी दो प्रकार हो जाते हैं—औपशमिक और क्षायिक यथाख्यात चरित्र। ग्यारहवें गुणस्थान में औपशमिक यथाख्यात चरित्र होता है। केवलज्ञानी में औपशमिक यथाख्यात चरित्र नहीं, क्षायिक यथाख्यात चरित्र होता है।

सिद्धों में तो चरित्र होता ही नहीं है। चरित्र तो साधन है, मार्ग है। साध्य या मंजिल मिलने के बाद साधन या मार्ग का महत्त्व नहीं रहता है। चरित्र एक पथ है, उपाय है, साधन है। साध्य प्राप्त होते ही साधन कृत्य-कृत्य हो जाता है। सिद्धों को तो मंजिल मिल चुकी है, पर चरित्र का गुण उनमें रहता है। वीतरागता उनमें बनी रहती है।

चौथा है—अनुत्तर तप। केवलज्ञानी आत्मा जो मनुष्य रूप में, साधु रूप में है, उनका तप भी अनुत्तर है। शुक्ल ध्यान जैसा ऊँचा ध्यान उनमें होता है। केवलज्ञानी का चरित्र-मोहनीय कर्म क्षीण हो चुका होता

है। इसलिए उनमें दर्शन मोहनीय भी नहीं है, चरित्र-मोहनीय भी नहीं है। इसलिए उनका चरित्र भी क्षायिक और सम्यक्त्व भी क्षायिक होता है।

दर्शन शब्द के भी दो अर्थ हो जाते हैं। दर्शनावरणीय कर्म के क्षय होने से केवल-दर्शन की प्राप्ति होती है और दर्शन-मोहनीय के क्षय से अनुत्तर दर्शन हो जाता है। पाँचवाँ है—अनुत्तर वीर्य। केवलज्ञानी के अंतराय कर्म क्षीण हो चुका होता है, जो वीर्य में बाधक होता है। इसलिए केवलज्ञानी का वीर्य भी अनुत्तर हो जाता है। शक्ति अनंत हो जाती है। ये पंचाचार के जो शब्द हैं, ये अनुत्तर है, केवलज्ञानी में।

छठा बताया है—अनुत्तर क्षांति। क्षमाशीलता जो केवलज्ञानी में होती है, उनसे ज्यादा क्षमाशीलता किसी में नहीं होती है। उनकी क्षांति-सहिष्णुता भी अनुत्तर रहती है। सातवाँ अनुत्तर है—मुक्ति। निर्लोभता, अनासक्ति जो केवल ज्ञानी में होती है, वह अनुत्तर होती है। आठवाँ है—अनुत्तर आर्जव। निष्कपटता-ऋजुता केवलज्ञानी से ज्यादा किसी में नहीं होता। नौवाँ अनुत्तर है—मार्दव। अहंकार विलय भी केवलज्ञानी से ज्यादा किसी में नहीं होता। दसवाँ है—अनुत्तर लाघव। लघुता। उपकरणों का हल्कापन। केवलज्ञानी तो अनासक्त चेतना है। कोई ग्रंथि नहीं, कोई बाह्य संग्रह नहीं।

उनसे ज्यादा हल्कापन और किसी में नहीं।

हम ध्यान यह दें कि केवली के पास जितनी मात्रा में ये दस चीजें हैं, उतनी मात्रा में तो हर चीज हमारे पास नहीं है। पर उनसे ज्यादा कम भी हम न रहें। कोई मिथ्यात्वी बन गया, वो तो उनमें बहुत ज्यादा कम हो गया। मति-श्रुत ज्ञान भी इतना कमजोर है, तो उनसे बहुत ज्यादा कम हो गए। केवल दर्शन तो नहीं है, पर क्षायिक सम्यक्त्व आ गया तो दर्शन की तुलना में हम भी उनसे कम नहीं रहेंगे।

दस चीज में से एक ही चीज ऐसी है, जिसकी दृष्टि से हम उनके बराबर छद्मस्थ लोग भी हो सकते हैं, वो हैं, अनुत्तर दर्शन और क्षायिक सम्यक्त्व होता है। आशा नहीं है कि क्षायिक चरित्र इस जन्म में मिल जाएगा, परंतु बहुत ज्यादा कमजोर चरित्र भी न रहे, बहुत ज्यादा दोषी चरित्र भी न रहे। अनुत्तर शुक्ल ध्यान है, उसकी भी आशा न करें पर जितनी एकाग्रता, भीतर में जाने की स्थिति बन जाए तो उनकी तरफ हम और आगे बढ़ जाएँ।

वीर्य भी हमारा कुछ तो उत्तर हो, चेतना में शक्ति जाग जाए, अंतराय कर्म कमजोर पड़ जाए। वीतराग में जो अनुत्तर शांति है, वो तो संभव नहीं है, पर बहुत ज्यादा गुस्सेल भी न बनें। क्रोध हमारा कमजोर है, प्रतनु है, तो हमारी गतिमत्ता भी हो सकती है। ज्यादा इच्छा, लालसा,

कामना भी न रखें। ऋजुता हमारी विकसित हो। कथनी-करनी में समानता हो। ज्यादा घमंड न रहे। ज्यादा संग्रह न करें। शरीर से भी भारी न हो जाएँ तो अनुत्तरता की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं।

हम केवली के ही भक्त हैं, शिष्य हैं तो अनुत्तर नहीं तो कुछ अंशों में हमारी गति हो जाए और कामना करें कि कभी हम भी इन अनुत्तर दस चीजों से युक्त बन जाएँ। अमृत देशणा प्रदान करवाने से पूर्व पुज्यप्रवर ने अनुष्ठान करवाया। तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए। रात्रिक अनुष्ठान भी नियमित करवा रहे हैं।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि दो शब्द हैं—तपस्या और निर्जरा। दोनों के ही बारह प्रकार हैं, पर तप और निर्जरा एक नहीं है। तप कारण है, निर्जरा कार्य है। कारण में कार्य का जब हम उपचार कर देते हैं, तब हम तप को ही निर्जरा के रूप में स्वीकार कर लेते हैं। भिक्षाचरी भी तपस्या है, जो निर्जरा में निमित्त भूत बनती है। भिक्षाचरी का दूसरा नाम आता है, वह है, वृत्ति संक्षेप। अभिग्रह भी भिक्षाचरी का रूप है। मोहनलाल गोखरू ने अपनी भावना व्यक्त की।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि पूज्यप्रवर की मंगल देशणा से हम शक्ति संपन्न बनें।

जीवन के हर क्षण का सम्यक् एवं आध्यात्मिक... (पृष्ठ १२ का शेष)

चौथी अवस्था ३१ से ४०वें वर्ष तक ही है—बला। इसमें आदमी में बल प्रदर्शन की क्षमता प्राप्त हो जाती है। पाँचवीं अवस्था है—प्रज्ञा (४१ से ५० वर्ष तक)। इसमें आदमी को परिवार के बारे में सोचना होता है। छठी अवस्था (५१ से ६० वर्ष) हायिनी। इसमें कुछ इंद्रिय-बल क्षीण हो जाता है। विरक्ति भी आ सकती है। सातवीं है—प्रपंचा (६१ से ७० वर्ष) इसमें शरीर में थूक का बार-बार आना व कफ बढ़ जाते हैं, खॉंसी भी आने लग जाती है। उतार की स्थिति है।

आठवीं (७१ से ८० वर्ष) है—प्राग्धारा। इसमें शरीर की चमड़ी में झुर्रियाँ पड़ जाती हैं। बुढ़ापा आने लग जाता है। नवमी है—भिन्मुखी। ८१ से ९० की अवस्था, इसमें बुढ़ापा आक्रमण करने लग जाता है। जीवन के प्रति उदास हो जाता है। दसवीं है—शायिनी (९१ से १०० वर्ष) इसमें आदमी सोया रहता है। जीवन का अंतिम दशक है। स्वर भी इतना बुलंद नहीं रहता। मन में दुःखी रहता है।

ये दस अवस्थाएँ हैं। इन अवस्थाओं के संदर्भ में हम एक बोध ले सकते हैं कि जीवन की शैली का १० वर्षों के बाद बदलाव-मोड़ लिया जा सकता है। अनुकूलता से तो चिंतन किया जा सकता है कि अब आगे कैसे जीना है। नवमें दशक में तो धर्म-ध्यान में ज्यादा समय लगाना चाहिए। वर्तमान में तो कई साधन हैं, धार्मिक साधन के।

चारित्रात्माएँ हैं, युवावस्था है, तो यात्राएँ करें, सेवा करें। जवानी जाने के बाद कई स्थितियाँ शरीर पर असर कर सकती हैं। जवानी की अवस्था जाने के बाद वापस आती नहीं है।

मुनि ध्रुव कुमार आज सुबह आया था। आज उसका जन्म दिवस तिथि और दिनांक के हिसाब से एक है। उन्नीस वर्ष का हो गया। जवानी में संयम की साधना अपनी अच्छी रहे। साथ में सेवा-स्वाध्याय, विकास होता रहे। सैनिक की तरह सेवा में हर समय तैयार रहे। आध्यात्मिक साधना अच्छी चले। ज्ञानार्जन का विकास हो।

यों हमें दस अवस्थाओं का सम्यक् उपयोग करना चाहिए। वृद्धावस्था में जाप करें। ताकि चेतना की शुद्धता बनी रहे। बैठे-बैठे पढ़ाने-बताने के काम किए जा सकते हैं। जीवन की दसों अवस्थाओं का हमारा आध्यात्मिक उपयोग अच्छा होता रहे, ऐसा चारित्रात्माओं का रूझान रहे।

मुख्य नियोजिका जी ने भिक्षाचरी के बारे में कहा कि भिक्षु के लिए भिक्षा चर्या करना बहुत कठिन है, पर महत्त्वपूर्ण भी है कि उसके बिना भिक्षु अपना जीवन नहीं चला सकता। भिक्षाचर्या भी निर्जरा का एक कारण है। रस परित्याग के बारे में बताया कि साधु या श्रावक आहार करते हुए भी स्वादिष्ट पदार्थों का त्याग कर तपस्या कर सकता है।

साध्वीवर्या जी ने शांति संपन्नोऽम स्याम भावना का विवेचन करते हुए कहा कि हर व्यक्ति शांति चाहता है। शांति हमारे भीतर ही है। शांति के अभाव में सुख की कल्पना नहीं की जा सकती और सारी सामग्री नहीं है, पर शांति है, तो सुख ही सुख है। हमारी आत्मा में कषाय रूपी शूलें हैं, उनको बाहर निकालें तो शांति मिल सकती है। बुरी भावना, बुरे विचारों का त्याग करें। त्याग करने वाला परम शांति प्राप्त कर सकता है।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि हमारे साथ अंतराय कर्म जुड़ा हुआ है, जो हमारी शक्ति को बाधित करने वाला होता है।

रक्तदान शिविर

जयपुर।

तेयुप द्वारा स्वैच्छिक रक्तदान शिविर की शृंखला के अंतर्गत रक्तदान शिविर का आयोजन आरपीएफ, जयपुर में किया गया। एएससी एके त्यागी सहित अन्य पदाधिकारियों का स्वागत अभातेयुप के महामंत्री मनीष दफ्तरी एवं तेयुप के अध्यक्ष राजेश छाजेड़ ने पचरंगा ओढ़ाकर किया। अभातेयुप के महामंत्री मनीष दफ्तरी ने कहा कि रक्तदान शिविर के आयोजन में तेयुप की पहल पर आरपीएफ, जयपुर का जुड़ाव होना जन-जन को प्रेरित कर रहा है। परिषद के अध्यक्ष राजेश छाजेड़ के आह्वान पर आरपीएफ, जयपुर में नियुक्त कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर रक्तदान में भाग लिया।

परिषद के मंत्री सुरेंद्र नाहटा ने बताया कि कार्यक्रम में जयपुर शाखा प्रभारी अभिनंदन नाहटा, मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव के राष्ट्रीय संयोजक हितेश भांडिया, अभातेयुप कार्यसमिति सदस्य दिनेश बुरड़, तेयुप, जयपुर के निवर्तमान अध्यक्ष श्रेयांस बैंगानी, पूर्व अध्यक्ष श्रेयांस पारख, कोषाध्यक्ष करण नाहटा, कार्यसमिति सदस्य सौरभ बैद, कुलदीप बैद, मुख्य संयोजक दीपक भंसाली, सह-संयोजक प्रवीण भूतोडिया व वरुण बरडिया सहित अन्य तेयुप कार्यकर्ताओं के सहयोग से शिविर में रक्त का संग्रहण संतोकाबा दुर्लभ जी ब्लड बैंक के द्वारा किया गया।



जीवन की हर परिस्थिति में समता एवं अभय की अनुप्रेक्षा करें : आचार्यश्री महाश्रमण

भीलवाड़ा, १४ अक्टूबर, २०२१

साधना के शिखर पुरुष आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए फरमाया कि ठाणं आगम के दसवें अध्याय में १००वें सूत्र में बताया गया है कि हमारी दुनिया नियमों या व्यवस्था से चल रही है। शास्त्रों में अनेक बातें मिलती हैं। जिनसे जानकारी मिलती है कि शास्त्रों के अनुसार ये-ये कई सृष्टि के नियम कि कौन प्राणी मरकर के कहाँ जा सकता है, कौन प्राणी कहाँ से आया हो सकता है।

कभी-कभी ऐसी घटना भी घट सकती है, जो सामान्यतया नहीं होने की है। ऐसी घटना को आश्चर्य कहा जा सकता है। सामान्य रूढ़ियाँ प्रसंग से हटकर एक बात का होना आश्चर्य की बात हो सकती है। ठाणं के इस सूत्र में दस आश्चर्य बताए गए हैं।

जैन शासन में भगवान महावीर के काल तक दस ऐसी अद्भुत घटनाएँ घटी हैं, जिन्हें आश्चर्य की संज्ञा दी गई है। ये घटनाएँ भिन्न-भिन्न तीर्थकरों के समय में घटित हुई हैं। अनेक घटनाएँ तो भगवान महावीर से या उनके समय से जुड़ी हैं। आश्चर्य है—उपसर्ग। तीर्थकर के उपसर्ग होना। भगवान महावीर ने भी कितने उपसर्गों को सहा था या सामना किया होगा। विशेष बात उन उपसर्गों में यह है कि केवलज्ञान हो जाने के बाद भी उपसर्ग आया था। ऐसे तीर्थकर तो महापुण्यशाली होते हैं। तीर्थकर नाम कर्म गौत्र का होगा भी, तीर्थकरत्व का होना भी उनकी महान पुण्यशालिता का परिचायक होता है।

भगवान महावीर के साधना-काल में भी अनेक उपसर्ग आए थे। तीर्थकरत्व की अवस्था में भगवान महावीर पर तेजोलब्धि का प्रयोग किया गया था। यह आश्चर्य की बात है। दूसरा प्रसंग आश्चर्य का है—गर्भ संहरण। भगवान महावीर जब देवानंदा



ब्राह्मणी की कुक्षी में थे फिर उनका त्रिशला की कुक्षी में स्थानांतरित किया गया था।

तीसरा आश्चर्य है कि उन्नीसवें तीर्थकर मल्लीनाथ प्रभु का स्त्री रूप में अवतरण होना। स्त्री का तीर्थकर बनना सामान्य व्यवस्था से हटकर एक आश्चर्य है। चौथा प्रसंग है—अभावित परिषद् तीर्थकर की देशणा का खाली चला जाना। भगवान महावीर की प्रथम देशणा खाली चली गई थी। कोई भी विरति भाव वाला नहीं बना यह भी एक आश्चर्य है।

पाँचवाँ प्रसंग है—कृष्ण का अपरकंका नगरी में जाना। जैन भूगोल में अढ़ाई द्वीप में दूसरा द्वीप है घातकीखंड है, वहाँ ये अपरकंका नाम की नगरी है, जिसमें राजा पद्मनाथ हुए थे, जिन्होंने द्रोपदी का अपहरण कर लिया था मित्र देव की सहायता से। कृष्ण द्रोपदी को वापस लाने अपरकंका नगरी गए थे। लंबा प्रसंग है।

अन्य द्वीप में चला जाना यह आश्चर्य की बात है।

छठा आश्चर्य है—चंद्र और सूर्य का विमान सहित पृथ्वी पर आना। भगवान महावीर के पास कौशाम्बी नगरी में दिन के अंतिम प्रहर में चंद्र और सूर्य अपने-अपने मूल शाश्वत नियमों सहित समोवसरण में भगवान महावीर को वंदना करने आए। शाश्वत विमानों सहित आना एक आश्चर्य है, वरना उत्तरवैक्रिय के द्वारा निमित्त विमानों से आते हैं।

सातवाँ एक प्रसंग है—हरिवंश कुल की उत्पत्ति का होना। यह एक लंबा आश्चर्यकारी प्रसंग बना है। आठवाँ है—चमर का उत्पात। चमरेंद्र का सौ धर्म देवलोक में चला जाना। किस प्रकार भवनपति निकाय का इंद्र चमरेंद्र कैसे ऊपर सौ धर्म देवलोक में जाता है, वहाँ के इंद्र की अवहेलना करता है, फिर भगवान

महावीर की शरण में आता है। भवनपति इंद्र का ऊपर चले जाना यह भी एक आश्चर्य है।

नौवाँ प्रसंग है—आश्चर्य का एक समय में १०८ सिद्ध का होना। १०८ व्यक्तियों का एक साथ मुक्त हो जाना। जब भगवान ऋषभ मुक्ति को प्राप्त हुए थे तब उनके साथ उनके ६६ संसारपक्षीय पुत्र और ८ पौत्र एक स्वयं यूँ मुक्ति को प्राप्त हुए थे। उत्तराध्ययन सूत्र में तीन प्रकार से १०८ सिद्ध एक समय में होने के बताए गए हैं। निर्गन्ध के वेष में एक साथ १०८ सिद्ध हो जाए। मध्यम अवगाहना में एक साथ १०८ सिद्ध हो जाएँ, तिरछे लोक में एक साथ १०८ सिद्ध हो जाते हैं। यहाँ पर आश्चर्य की बात यह है कि भगवान ऋषभ के समय में उत्कृष्ट अवगाहना थी। उत्कृष्ट अवगाहना शरीर वाले व्यक्ति एक साथ ज्यादा से ज्यादा दो ही मोक्ष में जा सकते हैं। उत्कृष्ट

अवगाहना शरीर वाले १०८ का एक साथ मोक्ष जाना आश्चर्य है।

दसवाँ प्रसंग बताया गया है कि असंयमी की पूजा। नौवें तीर्थकर सुविधिनाथ भगवान के निर्वाण के बाद कुछ समय बीतने पर हूंडा अवसर्पिणी के प्रभाव से साधु परंपरा का विच्छेद हो गया। तब श्रावकों को धर्म का ज्ञाता मानकर उनकी पूजा करने लगे। अपनी पूजा और प्रतिष्ठा होते हुए देखा तो उन धर्म को बताने वाले श्रावकों में अहंकार आ गया। नए शास्त्रों की रचना कर दी। द्रव्य दान के अधिकारी भी हम ही लोग हैं, यूँ असंयती की पूजा होने लगी।

हमारी सृष्टि में ऐसी घटनाएँ घट सकती हैं। वर्तमान में जो कोरोना की स्थिति बनी वो भी एक संभवतः ऐसी घटना पिछले ८०-१०० वर्षों में हुई नहीं होगी। आश्चर्य जैसा है। हमारा समता भाव व अभय की अनुप्रेक्षा चलती रहे। नवरात्र का आठ दिन का क्रम चलाया, वो भी आज संपन्न हो गया है। हम हमारे ज्ञान, दर्शन, चारित्र्य व तप की साधना में आगे बढ़ें। पूज्यप्रवर ने तपस्या के प्रत्याख्यान करवाए।

मुख्य नियोजिका जी ने कहा कि बाह्य तप में चार प्रकार आहार से जुड़े हुए हैं। पाँचवें तप काम-क्लेश की विवेचना करते हुए समझाया कि काय-क्लेश यानी शरीर को कष्ट देना। उत्कृष्ट आसनों को धारण करना। शरीर को साधे बिना साधना की भूमिका में आरोहण नहीं किया जा सकता। आतापना लेना भी काय-क्लेश हैं

मुमुक्षु रोशनी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। संजय भानावत ने सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी।

कार्यक्रम का संचालन करते हुए मुनि दिनेश कुमार जी ने बताया कि साधना बल के द्वारा सारे बल व अनेक शक्तियों का पुज्यप्रवर में दर्शन किया जा सकता है।

जीवन के हर क्षण का सम्यक् एवं आध्यात्मिक उपयोग करें : आचार्यश्री महाश्रमण



भीलवाड़ा, १२ अक्टूबर, २०२१

जीवन के निर्माता, शक्ति के महासागर आचार्यश्री महाश्रमण जी ने नवरात्र से संबंध अनुष्ठान से पूर्व पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आध्यात्मिक अनुष्ठान का क्रम चल रहा है। आगम का पाठ पुनः पुनः उच्चारण किया जा रहा है। आदमी उच्चारण जितना संभव हो सके अच्छा करे, शुद्ध करे। संस्कृत और प्राकृत भाषा का कईयों को ज्ञान हो सकता है, न भी हो सकता है।

भाषा का अपना महत्त्व है। भाषा ज्ञान प्राप्ति एक माध्यम बनती है। चाहे भोजन हो या भजन हो, चाहे भाषण हो या भावना हो, इन सब में शुद्धता है, तो अपने आपमें अच्छी बात हो सकती है। भाषा तो एक बाह्य आवरण है, भावना का ज्यादा महत्त्व है। आवरण का भी थोड़ा महत्त्व है। भाषा शुद्ध होगी तो अच्छी लगेगी।

मुख्य प्रवचन में परम पावन ने फरमाया कि ठाणं आगम में शास्त्रकार ने बताया है कि पुरुष के जीवन में १०-१० वर्ष की दस अवस्थाएँ होती हैं। आदमी का जीवन काल वर्तमान के परिप्रेक्ष्य में यहाँ पर १०० वर्ष का पूर्ण आयुष्य हो सकता है। सौ पार करने वाले भी हो सकते हैं। हमारे धर्मसंघ में साध्वी बिदामाजी जीवन के ग्यारहवें दशक में चल रही हैं। धर्मसंघ में प्रथम चारित्रात्मा हुई है, जो सौ पार करके जीवन की दूसरी शताब्दी के प्रथम दशक में प्रवर्धमान है।

शतायु वर्ष के संदर्भ में दस दशाएँ होती हैं। पहली अवस्था है—बाला। प्रथम दस वर्ष का बाल्यकाल का जीवनकाल। इसमें ज्यादा सुख-दुःख की अनुभूति नहीं होती। निश्चिंत जीवन रहता है। शिशुत्व की अवस्था है। दूसरी अवस्था है—क्रीडा। ११वें से २० वर्ष तक का समय खेलकूद का होता है। इन्द्रियाँ शांत रहती हैं। तीसरी अवस्था २१वें से ३० वर्ष तक की है—मंदा। इसमें व्यक्ति को मंद कहा गया है। विशिष्ट बल का प्रदर्शन करने में कुछ मंद रहता है। भावनाएँ बढ़ जाती हैं। शरीर सुदृढ़ हो जाता है।

(शेष पृष्ठ ११ पर)